शक्ति संचय के पथ पर

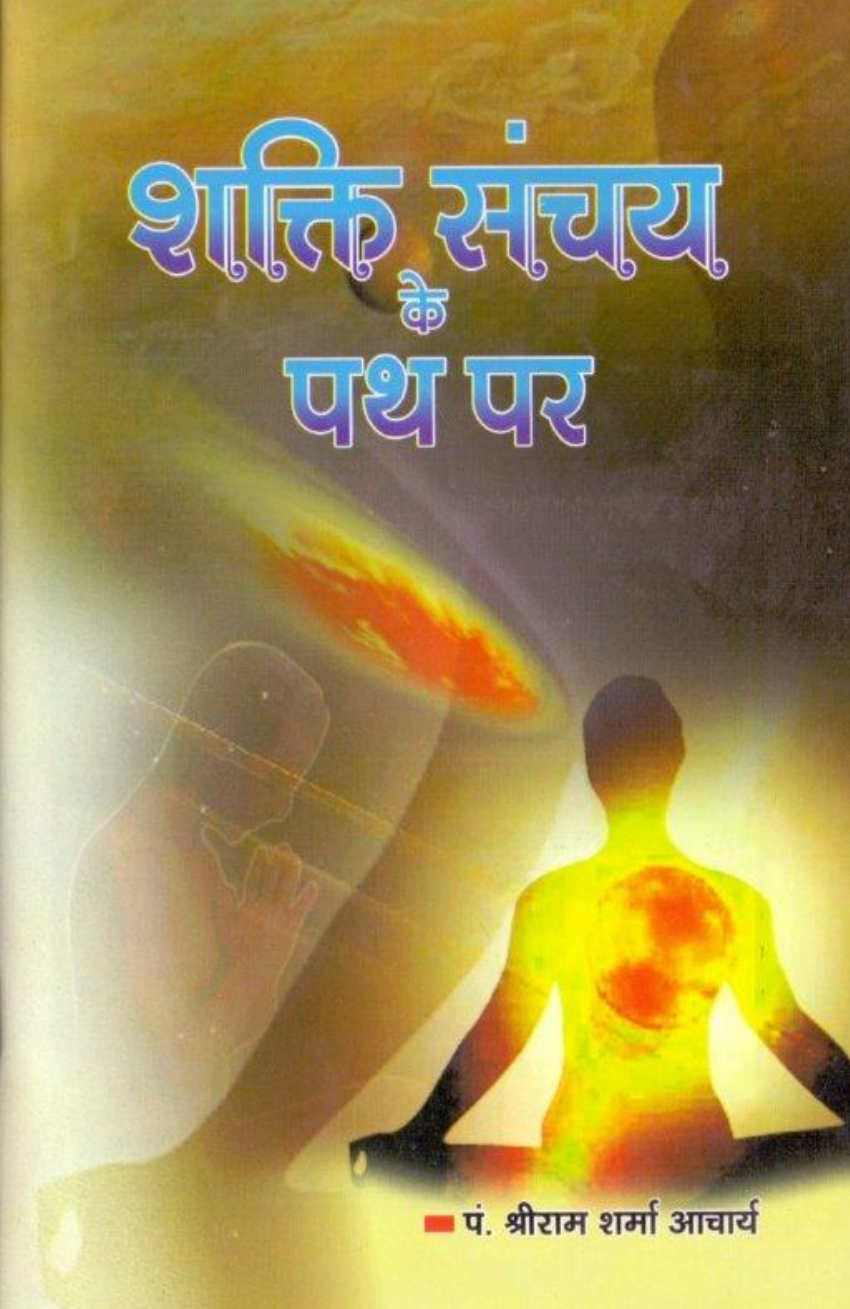

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

ॐ

शक्ति संचय के पथ पर

लेखक :
श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१५ मूल्य : ७.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूमिका

शक्ति ही सुख की जननी है । बिना शक्ति के सुख संभव नहीं । अशक्त मनुष्य किसी न किसी प्रकार के दुःख में निरन्तर डूबे रहते हैं । निर्बलता एक बहुत बड़ा पाप है जिसके परिणाम स्वरूप नाना भांति के दुःख उठाने पड़ते हैं । इसलिए दुःख से बचने और सुख प्राप्त करने के लिए शक्ति संचय की आवश्यकता होती है ।

ईश्वर प्राप्ति, धर्म साधना और परमार्थ की उपलब्धि के लिए भी बल की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि सांसारिक सफलताओं के लिए । शक्ति सम्प्रदाय तो एक मात्र शक्ति को ही ईश्वर मानता है । गीता में भगवान् ने अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए शक्तिशाली बड़े उत्तम पदार्थों में ही अपनी स्थिति बताई है । मुक्ति और स्वर्ग भी पुरुषार्थ के, बल के फल हैं । उपनिषदों में स्पष्ट कर दिया गया है कि -'नायमात्मा बल हीनेन लभ्यः ।' अर्थात्-'बलहीनों को आत्मा की प्राप्ति नहीं होती ।'

भौतिक और आत्मिक सुख शांति के लिए समृद्धि तथा स्वस्थता के लिए, जीवन धारण करने के लिए शक्ति की अनिवार्य आवश्यकता है । शक्ति संचय की महत्ता और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए इस पुस्तक में सब प्रकार के बलों को बढ़ाने की शिक्षा दी गई है । आशा है कि पाठकों के लिए यह विचारधारा उपयोगी होगी ।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहला पाठ

मनचाही सुख समृद्धि प्राप्त करने के लिए आध्यात्म विज्ञान को सीखिए !

आज कोई भला आदमी यह पसन्द नहीं करता कि उसका प्रिय सम्बन्धी आध्यात्म मार्ग में दिलचस्पी ले । माता को जब यह पता चलता है कि हमारा लड़का साधु-सन्तों की, पण्डे-पुजारियों की संगत में बैठता है तो उन्हें इससे क्रोध आता है और लड़के को रोकने का प्रयत्न करते हैं, स्त्री को पता चले कि मेरा पति बम्भोला बाबाओं के पास आने-जाने लगा है तो वह ऐसी चिन्तित हो जाती है मानो कोई भयंकर विपत्ति उस पर आने वाली है । सच्चा हित चाहने वाला प्रियजन अपने प्रेम पात्र को योगियों के, अध्यात्मवादियों के चक्कर में फँसने से बचाने की पूरी-पूरी कोशिश करता है, क्योंकि यह सचाई सर्वविदित हो चुकी है कि ऐसे लोगों के सम्पर्क में आने से मनुष्य निकम्मा, आलसी, दुर्गुणी, विचार शून्य, कल्पना प्रिय एवं गैर जिम्मेदार हो जाता है । सभी कोई अपने प्रिय पात्र को उन्नतिशील देखना चाहते हैं, उसे ऐश्वर्यवान्, तेजस्वी और सुखी बनाना चाहते हैं जब इच्छा के विपरीत उसे भिक्षुक, आलसी, नशेबाज, निठल्ले, दीन-दरिद्र, घृणित, मिथ्यावादी बनाने के मार्ग पर चलता देखते हैं तो उनका क्रोध करना और चिन्तित होना बिल्कुल स्वाभाविक है । ठीक भी है जो अपने को अनर्थ में गिरा हुआ देखकर चिंचित न हो, वह अपना कैसा ? नदी में डूबते हुए, गड्ढे में गिरते हुए, आग में जलते हुए मित्र को बचाने और रोकने का प्रयत्न न करे वह मित्र कैसा ?

प्राचीन काल में ऐसा न था । उस समय माता-पिता अपने बालकों को ऋषियों के आश्रम में भेजकर शिक्षा-दीक्षा के सम्बन्ध में निश्चिंत हो जाते थे । गरीब से लेकर राजा तक अपने बालकों के लिए यही हितकर समझते थे कि उन्हें महात्माओं के सुपुर्द कर दिया जाय क्योंकि अक्षर ज्ञान की शिक्षा के अतिरिक्त वहाँ आध्यात्मिक शिक्षा की भी व्यवस्था रहती थी । चिरकालीन अनुभव ने सिद्ध कर दिया था कि जीवन सफल, सुखी और सम्पन्न तभी हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है जब उसका निर्माण आध्यात्मिक आधार पर किया जाय । इस शिक्षा के बिना अपूर्णता दूर नहीं होती और वह दृष्टिकोण विकसित नहीं होता, जिसके आधार पर मनुष्य अपने लिए और दूसरों के लिए आनन्ददायक प्रमाणित होता है । कृष्ण को मथुरा से तीन सौ कोस दूर उज्जैन नगरी के निकट क्षिप्रा तट पर सन्दीपन ऋषि के आश्रम में भेजा गया था । राम को वशिष्ठजी ने आरम्भिक शिक्षा दी थी और विश्वामित्र के आश्रम में बहुत समय तक अध्ययन किया था । धृतराष्ट्र और पाण्डु के पुत्रों को द्रोणाचार्य ने पढ़ाया था । समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को तैयार किया था । इन ऋषियों के आश्रम में रहकर क्या राम, कृष्ण, पाण्डव, शिवाजी भिखमंगें, दरिद्री, निठल्ले, नशेबाज, अकर्मण्य और गैर जिम्मेदार बनकर निकले थे ? क्या उन्होंने चिमटा बजाने, गाँजा पीने, भभूत रमाने, भीख माँगने, तालियाँ पीट-पीट कर नाचने का पेशा अख्त्यार किया था ।

असल में आध्यात्म शिक्षा मानव जीवन को सुसंचालित करने की एक वैज्ञानिक पद्धति है, सफल जीवन बनाने की कलापूर्ण विद्या है, जिसके द्वारा बलवान्, वीर्यवान्, तेजस्वी, योद्धा, धनी, प्रतिष्ठित, प्रिय, उच्च पदारूढ़ अधिकारी, विद्वान् एवं महापुरुष बना जा सकता है । अपने को सुख-शांतिमयी, उल्लासपूर्ण, आनन्दमयी स्थिति में हर घड़ी रखा जा सकता है । मनुष्य चाहे कुछ भी व्यवसाय करता हो, किसी पक्ष के विचार रखता हो, कैसे ही मार्ग पर चल रहा हो, आध्यात्म शिक्षा उसके लिए व्यवहारिक रूप से सहायता करती है और उन्नति के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ाती है । इसमें अवनति, असफलता और अकर्मण्यता की ओर ले जाने वाला एक भी तत्व नहीं है ।

वर्तमान समय में गोरी जातियाँ योग के आरम्भिक नियमों का पालन कर रही है, उन जातियों ने आध्यात्मिक नियमों का उपयोग राजसी सुख प्राप्ति के लिए किया है तदनुसार स्वस्थ, हथौड़ों से गढ़े सुन्दर शरीर, हँसमुख चेहरे, विलास, वैभव, धन, ऐश्वर्य उन्हें प्राप्त है । हजारों लाखों मील जल-थल पार करके उनने अनेक भूखण्डों में अपनी सत्ता स्थापित कीं । यह सब केवल चालाकी या कूटनीति से ही नहीं हो जाता उसमें व्यक्तिगत सद्गुण भी होते हैं, शरीरोन्नति और मानसिक शक्तियों के विकास की ओर वे पूरा-पूरा ध्यान देते हैं, अपने को कष्ट सहिष्णु, परिश्रमी, नियमित, वीर, साहसी, कर्तव्य परायण बनाते हैं, तब इस योग्य होते हैं कि संसार में अपनी विजय पताका फहरावें ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय आध्यात्मवेत्ता उपरोक्त गुणों का अधिक उपयोग सात्विक उद्देश्यों के लिए और कम उपयोग राजसी उद्देश्यों के लिए कराते हैं । गोरी जाति वालों ने आध्यात्म नियमों को तो भली प्रकार हृदयंगम किया है, पर उनका उपयोग अधिकांश राजसी सुख के लिए किया । बस इतना ही अन्तर रहा अन्यथा यदि वे लोग अपने सद्गुणों का, तप भावना का उपयोग सात्विक उद्देश्यों के लिए करते तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाती और वह दृश्य उपस्थित होते जो प्राचीन काल में भारतीय महापुरुषों ने सारे भूमण्डल में अपनी सात्विक सेवा भावना द्वारा उपस्थित किए थे ।

हमारे देश में सार्वजनिक रूप से आध्यात्मिकता का लोप सा हो गया है । यों कहने को तो छप्पन लाख पेशेवर ऋषि महात्मा इस देश में चरते हैं और करीब-करीब उतने ही बिना पेशे वाले 'भगत' लोग मिल सकते हैं पर इनमें ऐसे लोग चिराग लेकर ढूँढ़ने पड़ेंगे जो योग का वास्तविक अर्थ समझते हों । घोर तामसिकता अपनी सखी सहेलियों-अविद्या, विचार शून्यता, हरामखोरी, दांभिकता के साथ संगठित और सुसज्जित रूप से आध्यात्मिकता के साथ आ विराजी हैं । राक्षसी पूतना ने कृष्ण को मार डालने के लिए गोपियों का रूप बनाया था । आज तामसी दांभिकता मनुष्य तत्व की हत्या करने के लिए बड़े-बड़े मनमोहक मायावी रूप बनाकर भारत भूमि में विचर रही हैं । पूतना का मायावी रूप भी ब्रजवासियों के मन में विश्वास पैदा न कर सका था । आज गृह त्यागी, वस्त्रहीन, जटाधारी माया को देखकर भी लोगों की अन्तरात्मा यह स्वीकार नहीं करती कि वह लोग स्वयं कुछ उन्नति कर रहे हैं या इनके संसर्ग में आने वाला कोई दूसरा भी उन्नति कर सकता है । दिल से दिल को राहत होती है । सचाई सहस्र छिद्रों में होती हुई प्रकट होती है । आज यदि लोग आध्यात्मवादी वायुमण्डल से बचने और बचाने का प्रयत्न करते हैं तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है ।

आज आध्यात्मिक क्षेत्र में ऐसे कंगले घुस पड़े हैं जिनमें पौरुष योग्यता, उपार्जन शक्ति, विवेक बल का बिल्कुल अभाव है, अपने योग्यता बल से कुछ भी कर सकने में असमर्थ होते हैं, यहाँ तक कि पेट भरने के भी मोहताज होते हैं । यह लोग जब अपने त्याग के गीत गाते हैं तो हँसी रोके नहीं रुकती । हमें धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों का पर्याप्त अनुभव है, भारतवर्ष के एक कौन से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूसरे कौने तक यात्राऐं की हैं, भिखमंगों से लेकर विद्वान्-संन्यासियों तक से घनिष्ठता रखने के अवसर प्राप्त हुआ करते हैं, हमारा अपना निजी अनुभव यह है कि इन क्षेत्रों में आधे से अधिक लोग ऐसे है जो जीवन में सफलता प्राप्त न कर सके, परिस्थितियों को इच्छानुकूल न बना सके, असमर्थ रहे, अपमानित हुए, नालायकी के कारण दुनियाँ से दुत्कारे गए, तब वे लोग हताश, उदास, दुःखी चिड़चिड़े होकर संसार को भव सागर मानकर अपने लिए एक काल्पनिक स्वर्ग की रचना करते हैं और उसमें बेपेंदी की उड़ानें उड़कर किसी प्रकार अपना मन बहलाते हैं । क्या यह लोग त्यागी हैं ? क्या यह संन्यासी हैं ? क्या यह आध्यात्मवादी हैं ? यदि योग्यता और अकर्मण्यता की प्रतिक्रिया का नाम ही आध्यात्मवाद है तो हर एक व्यक्ति को दूर से ही उसे नमस्कार करना चाहिए ।

बात असल में उससे बिल्कुल उल्टी है । आध्यात्मवाद एक प्रकार का उत्कट पराक्रम है । सच्चा आध्यात्मवादी सबसे पहले अपनी शारीरिक और मानसिक योग्यताओं को अपने पौरुष द्वारा बढ़ाता है और उन्हें इतना उन्नत कर लेता है कि उसके बदले में संसार की बड़ी से बड़ी वस्तु खरीद सके । अष्ट सिद्धि, नव निद्धि उसके हाथ आ जाती हैं अर्थात् इतना सूक्ष्म बुद्धिमान और क्रिया कुशल हो जाता है कि अपनी बड़ी से बड़ी सांसारिक इच्छा को अल्प समय में पूरा कर सकता है ।

सत्य का सूर्य सदा के लिए अस्त नहीं हो सकता । उल्लू और चमगादड़ों को प्रसन्न करने वाली निशा का आखिर अन्त होता ही है । अब वह युग निकट आ गया है जब सचाई प्रकट होगी और उसके प्रकाश में सब लोग वास्तविकता का दर्शन कर सकेंगे । नवयुग की स्वर्णिम ऊषा कमल पुष्पों की तरह मुस्कराती हुई विकसित होती चली आ रही है । वह आध्यात्म तत्व को अब और अधिक विकृत न होने देगी वरन् उसका शुद्ध रूप सर्व साधारण के सामने प्रकट कर देगी । जिस भोजन के अभाव में क्षुधित भारत चिरकाल से तड़प-तड़प कर कण्ठप्रण हो रहा है वह अमृत तत्व अब उसके सम्मुख शीघ्र ही रखा जाने वाला है । राष्ट्र और जातियाँ जिस स्रोत से शक्ति रूपी जल पाकर फलती-फूलती हैं, वह व्यवहारिक आध्यात्मवाद अपने विशुद्ध रूप में नव प्रकाश के साथ प्रकट होता हुआ चला आ रहा है । अदृश्य तत्वों को देखने वाली आत्माऐं देख रही हैं कि भारत माता के मस्तक को उसी पुराने स्वर्ण मुकुट से सजाया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जायगा और आध्यात्मिक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित भारतीय संतति उसके विजय घोष से विश्व को गुञ्जित करेगी ।

सत्य की खोज करने वाले व्यक्तियों को जानना चाहिए कि अध्यात्मवाद को जैसा कि आजकल तर्क और बुद्धि से विपरीत, निरर्थक कल्पना और दीन-दरिद्री बनाने वाली आलस्यमय बिडम्बना समझा जाता है, यथार्थ में वह वैसी वस्तु नहीं है । सिंह की खाल ओढ़कर गधा अपने को सिंह साबित करे तो इसमें सिंह की प्रतिष्ठा नहीं घटती, इसके दोष या तो धोखेबाज गधे पर हैं या भ्रम में पड़ जाने वाले भोले लोगों पर । लाख वर्ष तक लाख गधे सिंह की खाल ओढ़े फिरें, फिर भी सिंह की महानता, उसके गौरव को कम न होने देगी । अध्यात्मवाद अपनी अनंत अद्‌भुत शक्तियों के कारण असली सिंह है, उसकी महत्ता में रत्तीभर भी अंतर नहीं आता, भले ही लाखों ठग और मूर्ख उसका दुरुपयोग करके बदनाम करते रहें ।

आध्यात्मवाद वह विद्या है जिसको सर्वोपरि विद्या-ब्रह्म विद्या कहा गया है । भारतीय विश्वास है कि ब्रह्म विद्या को जाने बिना ज्ञान पूर्ण नहीं हो सकता । ऋषि उद्दालक का पुत्र श्वेतकेतु गुरु के आश्रम में अनेक विद्याओं का चिरकाल तक अध्ययन करने के उपरान्त घर वापिस लौटा तो पिता ने उसकी परीक्षा ली और जब ब्रह्म विद्या की न्यूनता देखी तो पुनः उसे गुरु गृह को वापिस भेज दिया । फिर भी जब कमी रही तो पिता ने स्वयं उस अपूर्णता को पूरा कराया । तात्पर्य यह है कि उस समय ब्रह्म विद्या की महत्ता को सब लोग भली भांति जानते थे और समझते थे यदि यह ज्ञान न आया तो मनुष्य 'पढ़ा गधा' भले ही बना रहे पर सफल जीवन, समृद्ध-सम्पन्न न बन सकेगा ।

जिस विचार पद्धति से मनुष्य अपने जीवन में प्रतिदिन आने वाली समस्याओं को आसानी से सुलझा सकता है, सही नतीजे पर पहुँच सकता है, ठीक मार्ग का अवलम्बन कर सकता है, उसे अध्यात्मवाद कहते हैं । व्यापार में अधिक लाभ, नौकरी में अधिक सुविधा और तरक्की, पत्नी प्रेम, पुत्र, शिष्य और सेवकों का आज्ञा पालन, मित्रों का भ्रातृभाव, गुरुजनों का आशीर्वाद, परिचितों में आदर, समाज में प्रतिष्ठा, निर्मल कीर्ति, अनेक हृदयों पर शासन, निरोग शरीर, सुन्दर स्वास्थ्य, प्रसन्न चित्त, हर घड़ी आनन्द, दुःख-शोकों से छुटकारा, विद्वत्ता का सम्पादन, तीव्र बुद्धि, शत्रुओं पर विजय, वशीकरण का जादू, अकाट्य नेतृत्व,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभावशाली प्रतिभा, धन-धान्य, इन्द्रियों के सुख दायक भोग, वैभव-ऐश्वर्य, ऐशो-आराम, सुख-संतोष, परलोक में सद्गति-यह सब बातें प्राप्त करने का सच्चा सीधा मार्ग अध्यात्मवाद है, इस पथ पर चलकर जो सफलता प्राप्त होती है, वह अधिक दिन ठहरने वाली, अधिक आनन्द देने वाली और अधिक आसानी से प्राप्त होने वाली होती है । एक शब्द में यों कहा जा सकता है कि सारी इच्छा-आकांक्षाओं की पूर्ति का अद्वितीय साधन अध्यात्मवाद है । इस तत्व का जो जितनी अधिक मात्रा में, जिस निमित्त संग्रह कर लेता है वह उस विषय में उतना ही सफल हो जाता है । सच्ची सफलता की सारी भित्ति इसी महाविज्ञान के ऊपर खड़ी हुई है फिर चाहे उसे अध्यात्मवाद के नाम से पुकारिये अथवा इच्छा शक्ति, पौरुष कुशलता आदि कोई और नाम रखिए ।

अध्यात्मवाद पुरुषार्थी लोगों का धर्म है । तेजस्वी, उन्नतिशील, महात्वाकांक्षी और आगे बढ़ने की इच्छा रखने वाले ही उसे अपना सकते हैं । मुक्ति सबसे बड़ा पुरुषार्थ है इसे वे लोग प्राप्त कर सकते हैं जिनमें अटूट धैर्य, साहस और पराक्रम है, कायर और काहिल लोग अपने हर काम को कराने के लिए देवी, देवता, सन्त-महन्त, भाग्य, ईश्वर आदि की ओर ताकते हैं । अपना हुक्का भी ईश्वर से भराकर पीना चाहते हैं ऐसे कर्महीनों के लिए उचित है कि किसी सनक में पड़े-पड़े झोंके खाया करें और खयाली पुलाब पकाया करें । सच्चे आध्यात्मवाद का दर्शन उन बेचारों को शायद ही हो सके ।

आप ब्रह्म विद्या की शिक्षा ग्रहण कीजिए, जिससे सुलझा हुआ दृष्टिकोण प्राप्त कर सकें । इस ज्ञान दीपक को अपने मन मंदिर में जला लीजिए जिससे हर वस्तु को ठीक-ठीक रूप से देख सकें । इस ध्रुव तारे को पहचान लीजिए जिससे दिशाओं का निश्चित ज्ञान रख सकें । इस राज पथ को पकड़ लीजिए जिससे बिना इधर-उधर भटके अपने लक्ष्य स्थान तक पहुँच सकें । ब्रह्म विद्या नगद धर्म है । इसका फल प्राप्त करने के लिए परलोक की प्रतीक्षा में नहीं ठहरना पड़ता, वरन् "इस हाथ दे, उसे हाथ ले" की नीति के अनुसार प्रत्यक्ष फल मिलता है । जब जितनी मात्रा में, जिस निमित्त उस तत्व का आप उपयोग करेंगे, तब उतनी ही मात्रा में उस कार्य में लाभ प्राप्त करेंगे परन्तु स्मरण रखिए यह विद्या कुछ मंत्र याद कर लेने, अमुक पुस्तक का पाठ करने, माला जपने, तिलक लगाने, आसन जमाने, सांस खींचने तक ही सीमित नहीं है, कर्मकाण्ड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस विद्या की प्राप्ति में कुछ हद तक सहायक हो सकते हैं, वे साधन हैं, साध्य नहीं । कई व्यक्ति इन कर्मकाण्डों को ही अंतिम सीढ़ी समझ कर लगे रहते हैं और इच्छित वस्तु को नहीं पाते तो उन पर से मन हटा लेते हैं ।

आत्म साधना के पथ पर चलने की इच्छा करने वाले हर एक पथिक को यह भली भांति समझ लेना चाहिए कि अपने विश्वास, विचार और कार्यों को उन्हें एक सुदृढ़ साँचे में ढालना होगा । मनुष्य जैसी कुछ भली-बुरी वाह्य परिस्थितियों में पड़ा हुआ दिखाई पड़ता है, वह उसकी मानसिक तैयारी का फल मात्र है । भीतर जैसे तत्वों का समावेश है, जैसे विश्वास, विचार, संस्कार जमा हैं, उन्हीं के कारण बाहरी जीवन की अच्छाई-बुराई का निर्माण होता है । अध्यात्मवाद का निश्चित सिद्धांत है कि मनुष्य की उन्नति-अवनति में, सुख-दु:ख में कोई और सत्ता हस्तक्षेप नहीं करती, वह स्वयं ही अपने भीतरी जगत को जैसा बनाता है, उसी के अनुसार दूर-दूर से खिंचकर परिस्थितियाँ उसके चारों ओर इकट्ठी हो जाती हैं । चूँकि आप इच्छानुसार, मन पसंद परिस्थितियों में रहना चाहते हैं, आप चाहते हैं कि दुनियाँ में वे पदार्थ और अवसर हमारे सामने रहा करें जैसा कि इच्छा करते हैं । यह बात सचमुच उतनी कठिन नहीं है, जितनी कि समझी जाती है, यह बहुत ही आसान है कि आप मनचाही आनंददायक परिस्थितियों में रहें और कोई ऐसा विग्रह उपस्थित न हो जो आपको बुरा लगे जिससे आपका आनन्द नष्ट होता हो ।

वह कल्पवृक्ष जो हर प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति करता है, आपके निज के भीतर मौजूद है, उसके पास पहुँचने का जो मार्ग है, उसे ही अध्यात्मवाद, ब्रह्म विद्या या योग साधना कहते हैं । गेहूँ की फसल काटने के लिए गेहूँ का बीज बोना पड़ता है और उसे ठीक रीति से सींचना, नराना पड़ता है । मनचाही परिस्थितियाँ प्राप्त करने के लिए ऐसे विचार, विश्वास और संस्कारों को मनोभूमि में बोना और सींचना पड़ता है जो बीज की तरह उगते हैं और निश्चत रूप से अपनी ही जाति के पौधे उपजाते हुए फूलते-फलते हैं । इसी मानसिक कृषि को संस्कृत भाषा में 'ब्रह्म विद्या' के नाम से उल्लेख किया गया है । यह विद्या उस प्रत्येक व्यक्ति को सीखनी पड़ती है जो प्रफुल्लित आनन्दमय जीवन जीने की इच्छा करता है । हमारे देश को तो विशेष रूप से इस शिक्षा की आवश्यकता है जिससे इस देश के निवासी वर्तमान दुर्दशा से स्वयं छूट सकें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और अपने देश को छुड़ा सकें । भारत संसार का पथ प्रदर्शक-धर्म गुरु रहा है । हम भारतीय सच्ची आध्यात्मिकता के आधार पर अपनी दशा में चमत्कार पूर्ण परिवर्तन करके संसार के सामने अपना गौरव प्रकट कर सकते हैं और प्राचीन महानता को पुनः प्राप्त कर सकते हैं ।

स्वामी विवेकानन्द ने एक बार अमेरिकन लोगों के सामने कहा था-"मेरे अमेरिकन मित्रो ! कदाचित् तुम यह कहो कि स्वामीजी ! आप सात समुद्र पार करके वेदान्त का उपदेश हमें देने क्यों आये हैं, क्या भारतवर्ष को इस सुनहले ज्ञान की आवश्यकता नहीं है ? इस प्रश्न का उत्तर मैं यही दे सकता हूँ कि वेदान्त धर्म का सच्चा अधिकारी और पात्र वही हो सकता है जो सामर्थ्यवान् हो, ऐश्वर्य सम्पन्न हो, लक्ष्मी जिसके चरण चूमती हो । तुम्हारा अमेरिकन जन समाज अटूट सांसारिक वैभव का स्वामी है, तुम्हारी संग्रहशीलता बढ़ी-चढ़ी है । इसलिए त्याग मूलक वेदान्त की आवश्यकता भी तुम्हें ही है और तुम्हीं इस वेदान्त के धर्म अधिकारी हो । मेरा हिन्दुस्तान भाग्य के फेर से और अपनी अकर्मण्यता, पौरुषहीनता के हेतु से आज दाने-दाने को मोहताज हो रहा है । उसे रोटियों के लाले हैं । ऐसे देश को मैं त्याग धर्म की क्या शिक्षा दूँ, अपने देशवासियों से तो मैं यही कहूँगा कि प्यारे ! कमाओ, खाओ और धन संग्रह करो ।"

अध्यात्मवाद सबको एक लाठी से नहीं हाँकता, उसकी शिक्षाऐं अधिकारी भेद के अनुसार अलग-अलग प्रकार की हैं । ब्रह्माजी ने भोग लिप्त देवताओं को इन्द्रिय दमन का, धनवान वैश्यों को दान का, बलवान् असुरों को दया का उपदेश दिया था । जिसके पास जैसी मनोभूमि और जैसे जैसे साधन हैं, उसके लिए उसी के अनुसार आध्यात्मिक साधना की व्यवस्था की गई है इसीलिए एक ही तत्व अनेक शाखा-प्रशाखाओं में बँटा हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

प्राचीन धर्म ग्रन्थों में अपने-अपने समय के विचारों को युगधर्म की आवश्यकता के अनुसार आध्यात्मिकता के विभिन्न रूपों में प्रकट किया गया है । 'सत्य' तो सदा एक ही है पर वह अपने-अपने समय में पृथक आकार प्रकार के साथ दृष्टिगोचर होता है । जल तत्व अविच्छिन्न है पर समयानुसार वह बादल, ओस, वर्षा, कुहरा आदि रूपों में दृष्टिगोचर होता है । हमारा प्रयत्न भी ऐसा ही है । हमारे पूजनीय पूर्व पुरुषों ने युगों तक गम्भीर मनन और अगाध अनुभव के आधार पर जिस आध्यात्म विज्ञान की रचना की है, उन्हें लागों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामयिक विचार पद्धति के अनुकूल बना कर आधुनिक ढंग से रखने का हमने विनम्र प्रयास किया है । शाश्वत सत्य के अनादि तथ्यों को आधुनिक विचार पद्धति से रखने की आवश्यकता अनुभव की गई, ताकि आज के युग में उन कठिन समझे जाने वाले विषयों को आसानी से हृदयंगम किया जा सके । यह पुस्तक इसी उद्देश्य से लिखी जा रही है । इस पर विचार करने के उपरान्त पाठक जान सकेंगे कि इस विद्या से छूत की बीमारी की तरह बचने की आवश्यकता नहीं है वरन् युवक और बालकों को इसमें पारंगत होने की जरूरत है ताकि वे जीवन को सुखी, समृद्ध और प्रतिष्ठित बना सकें ।

दूसरा पाठ

मैं अविनाशी हूँ, इसे आध्यात्मवाद का दीक्षा मंत्र समझिए !

मामूली से मामूली काम को लीजिए उसे पूरा करने के लिए कुछ समय की आवश्यकता होती है । श्रेष्ठ स्थायी कार्यों में अक्सर विलम्ब लगता है, फूस की झोंपड़ी चार दिन में बन कर तैयार हो सकती है, पर महल खड़ा करने के लिए तो वर्षों का समय चाहिए । मक्का की खेती दो महिने में पक सकती है, पर आमों का बाग लगाकर मधुर फल खाने के लिए दस वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी । वैसे तो भौतिक वस्तुऐं प्राप्त करने की इच्छा को पूरा करने के लिए बहुत समय चाहिए, धनी बनने के प्रयास में सारी जिन्दगी खर्च हो जाती तो भी सफलता संदिग्ध रहती है फिर यह भी मान लिया जाय कि किन्हीं विशेष प्रयासों से कोई मनुष्य भौतिक वस्तुऐं शीघ्र प्राप्त कर सकता है तो भी यह निश्चित है कि स्थायी सम्पत्ति प्राप्त करने लायक योग्यता का संचय, समय साध्य है । एम० ए० पास करने के लिए बहुत दिनों तक सब ओर से चित्त हटाकर केवल घोर अध्ययन में प्रवृत्त रहना पड़ता है, यदि ऐसा न किया जाय तो उस उच्च योग्यता को प्राप्त करना कठिन है । इस प्राकृतिक नियम पर मनुष्य का कुछ काबू नहीं कि बोया हुआ बीज बहुत समय लेकर तब कहीं फलता-फूलता है । हम चाहते हैं कि हथेली पर सरसों जम जाया करे, पर मजबूरी है वैसा होता नहीं, हो नहीं सकता है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव जीवन छोटा है, अस्थिर है और क्षण भंगुर है । आज स्वस्थ हैं, कल आरोग्यता खोकर अपाहिज हो सकते हैं, आज हँस-बोल रहे हैं, कल मरघट की भूमि में अदृश्य हो सकते हैं, समय बीतते देर नहीं लगती । जिये भी तो जीवन को सच्ची अवधि-यौवन की परिधि बहुत ही छोटी है । बालकपन और वृद्धावस्था में पराधीनता रहती है, कार्य शक्ति केवल यौवन में ही रहती है यह यौवन चंदरोज है, दोपहर की धूप की तरह ढल जाता है । कोई विचारवान् व्यक्ति जब इस अस्थिर और क्षणिक जीवन पर विचार करने बैठता है तो उसे बड़ी वेदना और निराशा होती है, आज हूँ, कल न रहूँ, आज क्रियाशील हूँ, कल अशक्त हो जाऊँ, तो कहीं का न रहूँगा । उसका धैर्य टूट जाता है और चाहता है कि इस प्रकार के कार्य करने चाहिए जिनका फल शीघ्र से शीघ्र मिल जाय, देर तक प्रतीक्षा न करनी पड़े ।

दान-पुण्य की, पूजा-पाठ की बात अलग है । मृत्यु को पास खड़ा समझ कर जल्द से जल्द दान-पुण्य कर ले-यह एक सामयिक और छोटी सी समस्या है । कोई व्यक्ति न तो दिन-रात दान-पुण्य करता रह सकता है और न पूजा-पाठ । यह कभी-कभी करने की बातें हैं । सारा समय तो उसे अपने और अपने आश्रितजनों की दैनिक जरूरतें पूरी करने में लगाना पड़ता है । जीवन निर्वाह की समस्या का हल करने में ही साधारणत: अधिकांश समय और बल खर्च होता रहता है । जीवन की अस्थिरता, नश्वरता और क्षणभंगुरता के नग्न सत्य पर जब एक विचारवान् व्यक्ति दृष्टिपात करता है तो उसके सामने दो कार्यक्रम उपस्थित होते हैं-पहला यह कि मुझे जिन्दगी का अधिक से अधिक मजा लूट लेना चाहिए । दूसरा यह कि संसार माया है, धोखा है, इसमें किसी से संबंध नहीं रखना चाहिए अन्यथा व्यर्थ दु:ख उठाना पड़ेगा । यह दोनों ही कार्यक्रम ऐसे हैं जो जीवन का सारा सौंदर्य नष्ट-भ्रष्ट कर डालते हैं ।

जब पहले कार्यक्रम के अनुसार वह जिन्दगी का मजा लूटने पर उतरता है और आत्मा की अमरता के बारे में विश्वास नहीं करता तो हर उचित और अनुचित तरीके से इन्द्रियों को तृप्त करना, अधिक तृप्त करना, अतिशय तृप्त करना उसका उद्देश्य बन जाता है । आपको अनेक व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जो खाओ, पियो, मौज उड़ाओ की नीति पर विश्वास करते हैं । ऋण लेकर घृत पीने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में कुछ हर्ज नहीं समझते । चोरी से, लूट से, ठगी से जैसे भी धन मिले प्राप्त करना, असत्य से, दगाबाजी से, बहकावे से जैसे भी हो सके अपना प्रयोजन सिद्ध करना उनका कार्यक्रम होता है, पैसे को पानी की तरह बहाते हैं । व्यभिचार, मद्यपान, माँसाहार, ऐश-इशरत, मन बहलाव के लिए वे घर के पैसे को ठीकरी की तरह लुटा सकते हैं । घर समाप्त हो जाय तो बाहर से पैसा प्राप्त करने के लिए ऋण लेना, ठगी, षड्यंत्र, अपहरण, हत्या आदि सब कुछ कर सकते हैं । उन्हें अपनी केवल अपने शरीर की चिन्ता होती है । आश्रित कुटुम्बी तथा अन्य व्यक्ति उनके आचरण से कितने दु:खी होते है, इसकी रत्तीभर भी परवाह नहीं करते । क्योंकि वे सोचते हैं 'आप मरे जग प्रलय' है । शरीर पानी का बबूला है, टूट गया तो मेरा भी अस्तित्व न रहेगा, फिर जो बहार आज लूट सकता हूँ, फिर कहाँ लूटूँगा ? ऐसा विचार करता हुआ वह धर्म, कर्म, सदाचार, न्याय, समाज हित, कीर्ति, प्रतिष्ठा सबको तिलांजलि देकर केवल अपने ऐशो-आराम की बात सोचता है और इसके लिए जो कुछ भी, जिस प्रकार भी कर सके, सब कुछ उचित समझता है । इसी दृष्टिकोण से काम करने वाले असंख्य लोग आपको अपने आसपास मिल सकते हैं ।

दूसरा दृष्टिकोण करीब-करीब आत्महत्या के बराबर है । कमजोर तबियत का आदमी जब अपने सामने किन्हीं बड़ी कठिनाइयों को खड़ा हुआ देखता है तो घबरा जाता है । आत्म विश्वास के अभाव में दीन होकर किंकर्तव्य विमूढ़ बन जाता है । सोचता है मेरे करने से कुछ न हो सकेगा, अपने ऊपर झुँझलाता है और सामने की कठिनाइयों का उत्तरदायित्व दूसरे के ऊपर थोप कर अपनी बेचैनी दूर करना चाहता है । आत्महत्या का यही मनोविज्ञान है । एक कमजोर तबियत की स्त्री जब पति को इच्छानुवर्ती नहीं बना सकती और न उसके अप्रिय व्यवहार को बदल सकती है तो कुएँ में गिरकर या किसी अन्य प्रकार से आत्महत्या कर लेती है । उस आत्महत्या से प्रकट होता है कि स्त्री ने दु:खदायी परिस्थितियों का निवारण अपनी शक्तियों से बाहर समझा और अपनी निर्दोषता एवं पति का दोष घोषित करने के लिए एक दु:खदायी भयंकर कर्म कर डाला । स्त्री ने शारीरिक आत्महत्या की, पर ऐसे अनेक लोग हैं जो जीवन की क्षणभंगुरता से डरकर मानसिक आत्महत्या कर लेते हैं । उनके नथुनों में से सांसें चलती रहती हैं, दिल धड़कता रहता है और अन्न जल भी जारी रखते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर यथार्थ में वे मृतक हो जाते हैं, उनके विश्वास और विचार बिल्कुल निराशा एवं असमर्थता के गर्त में गिर पड़ते हैं ।

चन्द दिन जीना है, क्यों खटपट पालें, क्यों किसी से प्यार-मुहब्बत जोड़ें, किससे बुराई बाँधें, दुनियाँ में क्या रखा है, कौन किसी का होता है, सब कब्र में पाँव लटकाये हुए हैं, सब यहीं पड़ा रह जायगा, जो मिलता है, भाग्य से मिलता है, ईश्वर की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता, इस प्रकार के विचार रखने का अर्थ है कि यह व्यक्ति जीवन की नश्वरता से डरकर किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया है और कार्य शक्ति के ऊपर विश्वास खो बैठा है । ऐसा व्यक्ति अपने को निराश, दीन-हीन, तुच्छ, असमर्थ समझता है और अपनी इन दुर्बलताओं पर मन ही मन झुँझलाता है । चिन्ता और बेचैनी से छुटकारा पाने का एक बहुत सस्ता उपाय है, जिसे कमजोर आदमी अक्सर काम में लाते हैं-वह यह कि "अपने दोषों को दूसरों पर थोप दिया जाय ।" इन आत्मघातियों को 'ईश्वर' एक ऐसा प्राणी मिल जाता है जो सफाई देने के लिए सामने नहीं आता और उस पर चाहे जैसे इल्जाम लगाये जा सकते हैं । ईश्वर ने हमें यह नुकसान पहुँचाया, उसी की टेढ़ी नजर से हानि हुई, बिना ईश्वर की मर्जी के सुख नहीं मिल सकता, ईश्वर की कृपा से पापी भी तर जाते हैं, जब ईश्वर को देना होगा तो छप्पर फाड़ कर देगा, ऐसी ऐसी बातें बनाकर वे यह साबित करना चाहते हैं कि जो कुछ भला-बुरा करता है, ईश्वर करता है । अपनी परिस्थितियों के लिए हम निर्दोष हैं, यह लोग काम करने की उपेक्षा करते हैं, कर्तव्य पालन को व्यर्थ बताते हैं, अजगर की तरह पड़ा रहना पसन्द करते हैं, संसार को मिथ्या बताते हैं । हरामखोरी में दिन नहीं कटता और पेट को अन्न की आवश्यकता होती है तो भूखे कायर की तरह ढोंग रचकर काम चलाते हैं । धर्म की अंधी पोल में सुरक्षित रूप से घुस बैठते हैं और काम चलाऊ भोजन, वस्त्र प्राप्त करते रहते हैं । ऐसे लोगों की एक अच्छी भली पलटन बन गई है । ऋषियों के पवित्र नाम को बदनाम करते हुए यह आत्म हत्यारे सन्त-महन्त, ज्योतिषी, पंडित-पुजारी, भगत आदि का वेष बनाकर गाल बजाते, मटरगश्ती करते, मुफ्त का माल चरते इधर-उधर विचरण करते हैं ।

चार दिन की बहार को जल्द से जल्द, अधिक से अधिक मात्रा में लूटने की मनोवृत्ति तथा अस्थिर जीवन में हम क्या कर सकते हैं-यह निराशापूर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मघाती भावना उस एक ही वस्तु के दो रूप हैं । किसी मनुष्य का एक फोटो मुख की तरफ से खींचा जाय और दूसरा पीठ की तरफ से तो दोनों एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न दिखाई पडेंगे, उनमें कोई समानता न होगी, तो भी सचाई यह है कि वे भिन्न आकृति फोटो एक ही शरीर के हैं । उपरोक्त दोनों मनोभावनाऐं वाह्यतः एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न दिखाई पड़ती हैं पर वास्तव में एक ही विचारधारा के दो प्रतिबिम्ब हैं, एक ही वृक्ष पर लगे हुए दो फल हैं ।

जीवन क्षण भंगुर है इस गंभीर तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता और इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि विचार करने वाला व्यक्ति इस सचाई को समझकर बहार लूटने में बेचैनी या निराशा पूर्ण घबराहट के कारण कर्म त्याग या आत्महत्या, इन दो ही मार्गों का अवलमबन करेगा । यह दोनों पथ बड़े घातक हैं । मनुष्य जब से सामाजिक प्राणी बना है, कुटुम्ब के साथ, बस्तियों में रहने लगा है, तब से उसका उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है । उसे अपनी सुविधाऐं प्राप्त करने का उसी सीमा तक अधिकार रह गया है तहाँ तक कि दूसरों की सुविधाओं से संघर्ष नहीं होता । जब कोई मनुष्य अपने लिए अधिक सुख प्राप्त करने की इच्छा से अन्य लोगों के अधिकारों को कुचलता है, तभी कलह, अशांति और उपद्रव उठ खड़े होते हैं इसलिए धर्म, व्यवस्था, कानून आदि के नाम पर ऐसे नियम बनाये गये हैं जिनके द्वारा बहुत चाहने वालों को, दूसरों की परवाह न करने वालों को बलपूर्वक रोका जा सके । जो मनुष्य 'बहार लूटने' की लालसा में अन्धा होकर घर का सब धन फूँककर अपने से सम्बन्धित अन्य व्यक्तियों के अधिकार का अपहरण करता है या चोरी, लूट करके बाहर के लोगों को सताता है, उसे रोकने के लिए प्रतिक्रिया स्वरूप कलह और संघर्ष पैदा होता है । इसी प्रकार कर्म त्यागी लोगों को अपाहिज श्रेणी का घृणास्पद, कायर समझकर चारों ओर से तिरस्कार किया जाता है । संक्रामक रोग कीटों की तरह समझदार लोग अपने को और अपने प्रियजनों को उनसे बचाते रहते हैं ।

तात्पर्य यह है कि अस्थिर जीवन की प्रतिक्रिया के कारण जो दृष्टिकोण उत्पन्न होते हैं वे दोनों ही अतीव घातक और समाज में क्लेश-कलह उत्पन्न करने वाले हैं । "दूसरों को नाराज करने वाला स्वयं भी विपत्ति में पड़ता है"- इस सिद्धांत के अनुसार अनीति पर चलने वाला स्वयं भी निरापद नहीं रह सकता है, उसे पग-पग पर प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है । चोरी, छल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और निष्ठुरता को अपनाना पड़ता है, हर घड़ी चालाकी और कूटनीति पर आश्रित रहने वाला सदा सुरक्षित नहीं रह सकता, किसी दिन उसे ऐसी ठोकर लगती है कि सारा ऐशो-आराम भूल जाता है, जितनी मौज उड़ाई थी उससे कई गुनी विपत्ति उठानी पड़ती है ।

सृष्टि के आरम्भ काल में जब मनुष्य ने सामाजिक जीवन आरंभ किया ही था तब यह दोनों दृष्टिकोण अभिशाप की तरह हानिकारक सिद्ध हुए । इनके कारण नाना प्रकार के उत्पात मचे रहने लगे और ऐसा प्रतीत हुआ कि शायद मनुष्यों को समाजबद्ध होकर रहने का प्रयास असफल होगा और पुनः पशु जीवन की ओर लौटना पड़ेगा अथवा वह जाति घोर अशांति वेदना में पड़ी-पड़ी छटपटाया करेगी । समस्त जाति के इस जीवन-मरण के प्रश्न पर सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्कों ने घोर गंभीर अनुसंधान किया और चिरकालीन योग साधना, तपश्चर्या एवं निदिध्यासन द्वारा एक ऐसे तत्व का अनुसंधान किया जिसने सूखती हुई आशा लता को पुनः पल्लवित कर दिया । आशा, उत्साह एवं कर्मनिष्ठा के साथ एक दूसरे की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए प्रेमपूर्वक रहना सम्भव कर दिया । यह तत्व संजीवनी बूटी के समान प्रमाणित हुआ जिससे एक दूसरे को खोंट खाने वाला मनुष्य व्याघ्र वृत्ति को छोड़कर गौओं की तरह हिल-मिलकर रहने लगा जिसके आधार पर लोग अपने सुख को दूसरों के ऊपर निछाबर करने के लिए प्रस्तुत हो गये, सचमुच वह तत्व महान् है, उसका आविष्कार धन्य है ।

भौतिक विज्ञान की खोज करते हुए जिसने अग्नि जलाने और उसका उपयोग करने का आविष्कार किया वह विज्ञानवेत्ता सर्वोपरि आविष्कारक था यदि अग्नि का प्रयोग न जाना गया होता तो आज मनुष्य जाति बन्दरों के समान जीवन यापन करती और यदि मानव विज्ञान के अन्तर्गत उस आध्यात्मिक तत्व का आविष्कार न हुआ होता तो सूखी हड्डी छीन लेने के लिए अपने जीवित भाई को फाड़ खाने वाले जंगली कुत्तों की तरह लोग आपस में लड़ा-भिड़ा करते और सात्विकता के दिव्य आनन्द से सर्वथा वंचित रह जाते ।

"आत्मा की अमरता" का सिद्धांत अध्यात्मवाद की आधारभूमि कही जाती है । यही वह सिद्धांत है जिसने जीवन निर्वाह की विवेचना में एक क्रान्ति उपस्थित कर दी । अनेक तर्क और प्रमाणों के साथ यह सिद्धांत प्रकट किया गया कि शरीर के साथ ही जीवन का अन्त नहीं हो जाता वरन् उसके पीछे भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कायम रहता है और वर्तमान जीवन के किये हुए कर्मों का फल मृत्यु के उपरान्त भी प्राप्त होता है । शरीर की क्षण भंगुरता के कारण जो घातक दृष्टिकोण उत्पन्न होते थे, जो बेचैनी, व्याकुलता और निराशा उठती थी, इस सिद्धांत ने उनका भली प्रकार समाधान कर दिया और मनुष्य को दूसरी तरह से सोच-विचार करने का मार्ग दिखाया । शरीर के साथ ही हमारा अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता और किए हुए कर्मों के भले-बुरे फल आगे भी मिलते हैं-यह विश्वास, अधीरता और व्याकुलता मिटाते हैं । जब आगे भी जीना है तो जल्दबाजी की क्या जरूरत ? जीवन अनन्त है तो मृत्यु से डरने, निराश होने या अल्प स्थायी भोगों के लिए व्याकुल होने का क्या प्रयोजन ?

आध्यात्मिकता का पहला मंत्र यह है कि "आत्मा को अमर मानो" इस सिद्धांत पर विश्व के सम्पूर्ण धर्म एक मत हैं । आर्य, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान, पारसी, यहूदी आदि सभी प्रमुख सम्प्रदायों के धर्म ग्रन्थ इस सिद्धांत पर सारा जोर लगा देते हैं कि 'आत्मा का अस्तित्व मरने के बाद भी रहता है और किये हुए कर्मों का फल भोगता है ।' फल प्राप्त होने की विधि-व्यवस्था स्वर्ग, नरक, पुनर्जन्म आदि की रूपरेखाओं के बारे में मतभेद पाया जाता है पर अमरता के मूलतत्व से किसी को रत्ती भर भी विरोध नहीं है वरन् सभी एक समान समर्थन करते हैं ।

धर्म ग्रन्थों की रचना का तीन चौथाई भाग परलोक की विवेचना करता है । (१) मरने के बाद आत्मा जीवित रहती है । (२) उसे फल भोगने पड़ते हैं । (३) इन तीनों बातों का एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए एक दैवी शासन मौजूद है । इन तीनों बातों को अनेकानेक दृष्टांतों के द्वारा, अनेकानेक कल्पनाओं द्वारा सिद्ध करने के निमित्त धर्माचार्यों ने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं । यमदूत, फरिश्ते, वैतरिणी, कुंभी पाक, ब्रह्मलोक, हूर, गिलमा, ईश्वर, देवी, देवता, दण्ड, पुरुस्कार, स्वर्ग, मुक्ति, पुनर्जन्म आदि के उपाख्यानों से भी मजहबों के पुराण ग्रन्थ भरे पड़े हैं । मोटे तौर से देखने में उन ग्रन्थों के लेखकों का उद्देश्य समझ में नहीं आता कि उन्होंने तीन चौथाई रचना अप्रत्यक्ष लोक के बारे में क्यों की, जबकि उन बातों को सिद्ध करने के लिए कोई मजबूत आधार नहीं है । यह भी आशंका उठती है कि प्रत्यक्ष जीवन के बारे में उन्होंने इतनी लापरवाही क्यों दिखाई कि एक चौथाई स्थान उसे मुश्किल से मिला । इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शंकाओं के संबंध में मनन करने पर पता चल जाता है कि प्रत्यक्ष जीवन की सारी सफलता का श्रेय उन्होंने इस बात में माना है कि मनुष्य मृत्यु के पश्चात् जीवन पर विश्वास करे, उस विश्वास को अधिकाधिक पुष्ट करने के लिए, कथाओं, उपाख्यानों एवं दृष्टांतों के रूप में पूरा प्रयत्न किया है । प्रत्यक्ष जीवन की तीन चौथाई सफलता 'अमरता के विश्वास' पर अवलम्बित मानकर उसी अनुपात से धर्म ग्रन्थों में उसको स्थान दिया है । जितनी भी कथा-वार्ताऐं पुराणों में मिलेंगी, वे किसी न किसी रूप से, मृत्यु के उपरान्त जीवन, फल की प्राप्ति और शासनकर्त्ता या उसके कर्मचारियों का वर्णन करती होंगी । इस छोटे से तथ्य को भली भांति हृदयंगम करा देने के लिए उसे नाना प्रकार के रंगरूपों की सजावट के साथ उपस्थित किया है । मनुष्य स्वभाव कौतूहल जनक घटना वाली बातों को सुनने में विशेष दिलचस्पी लेता है । इसलिए उस अध्यात्म तत्व को मनोरंजन का पुट देते हुए इतने विस्तारपूर्वक लिखा गया है ।

धर्माचार्यों ने अपनी सारी शक्ति लगाकर यह प्रयत्न किया है कि मनुष्य विश्वास करे कि वह अमर है क्योंकि इसी में सारे समाज की शांति का बीज छिपा हुआ है । नास्तिकों की तीव्र भर्त्सना शास्त्रों में की गई है, उन्हें बहुत बड़ा पापी बताया गया है । वैसे अप्रत्यक्ष बात पर विश्वास न करना कोई बुरी बात नहीं है, पर अमरता का सिद्धांत, जिसके ऊपर ईश्वर, धर्म त्याग, तप, परोपकार के महल खड़े किये हैं, अविश्वस्त एवं मिथ्या ठहरा दिया जाय तो उससे ऐसी विचारधारा उपज पड़ेगी जो समाज को क्लेश, कलह और स्वर्ग को रौरव नरक बना देगी । नास्तिक सिद्धांतवादी कहते हैं कि-"ईश्वर कोई नहीं है, प्रकृतितः सब काम अपने आप चलते हैं । आत्मा कुछ नहीं है, पंच तत्वों की अमुक मात्रा में मिश्रण से एक सजीव विद्युत धारा बहती है जो शरीर के साथ ही समाप्त हो जाती है ।" वे अनेक तर्क और प्रमाणों से अपने मत को सिद्ध करते हैं । हम विज्ञान द्वारा उनका समाधान करने की स्थिति में नहीं है, पर इतना अवश्य कहते हैं कि सामाजिक जीवन को शांतिमय बनाये रखना है तो 'अमरता' को स्वीकार किये बिना काम न चलेगा ।

अमरता की भावना के साथ अन्तःकरण में एक स्थिरता और धैर्य का उद्भव होता है । विचार उठता है कि जब अनन्त काल तक जीना है तो आज कष्ट उठाकर भी वह कमाई करनी चाहिए जो आगे चलकर स्थायी सुख प्रदान करे । लोग खुशी-खुशी कठोर परिश्रम के साथ धन कमाते हैं ताकि बुढ़ापे को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुखपूर्वक बितावें । भविष्य की आशा में आज के कष्टों को भुलाया जा सकता है । "दूसरे लोगों की सुविधा के लिए, अपनी सुविधाऐं त्यागना"-यही तो पुण्य आचरण है । पुण्य के लिए त्याग करना पड़ता है, उस त्याग के लिए कोई तभी तैयार होगा जब उसके सामने उज्ज्वल भविष्य हो । 'अमरता' में उज्ज्वल भविष्य की आशा है, किन्तु नास्तिकता में भविष्य ही नष्ट हो जाता है, बिना भविष्य की आशा के कोई त्याग के लिए तैयार क्यों होगा ? जब अपने स्वार्थ को प्रधानता देने और दूसरों की सुविधा के लिए त्याग न करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी तो प्रेम भाव नष्ट हो जायगा, सात्विक गुण निस्सार प्रतीत होने लगेंगे, खुदगर्जी की प्रधानता से पिशाच नगरी के दृश्य दिखाई देने लगेंगे, एक भी व्यक्ति चैन की नींद न सो सकेगा ।

इसलिए अध्यात्मवाद की दीक्षा 'अमरता' पर विश्वास के साथ आरम्भ होती है । जो सच्चे हृदय से अमरता पर विश्वास करता है, अपने को शरीर से भिन्न आत्मा मानता है, आत्म-हित को शरीर हित की अपेक्षा प्रधानता देता है, वह आध्यात्मिक व्यक्ति है । जो अपने को शरीर समझता है, शरीर हित को प्रधानता देता है, भोगों में शीघ्रता और अति के लिए आतुर है, वह नास्तिक है । जबान से तोते की तरह कई मनुष्य आत्मा की अमरता स्वीकार करते हैं पर भीतरी विश्वास के अभाव में जो कुछ विचारते एवं कार्य करते हैं, वह शरीर लाभ के लिए ही होते हैं । ऐसे लोग आस्तिक न कहे जा सकेंगे क्योंकि आस्तिकता का संबंध जिह्वा से कही जाने वाली शब्दावली से नहीं वरन् भीतरी सुदृढ़ विश्वासों से है । जिसने आत्मा के लाभ को प्रधानता देने की ओर प्रयत्न करना आरम्भ किया है, असल में उसे ही अध्यात्मवाद का जिज्ञासु समझना चाहिए ।

आप सच्चे हृदय से विश्वास कीजिए कि मैं अविनाशी हूँ । पग-पग पर दिखाई देने वाले भयों को मार भगा कर निर्भयता प्रदान करने वाला यह मृत्युंजय बीज मंत्र है । रोग का भय, मृत्यु का भय, दुर्घटना का भय, शत्रु का भय, विपत्ति का भय, न जाने कितने भय प्रतिदिन हमें डराते हैं, चिन्तित करते और दुःखी बनाते हैं । किसी भय की जरा सी छाया दिखाई दी कि कलेजा धक् धक् करने लगता है, क्योंकि जीवन नश्वर मालूम देता है । "यदि हम मर गये तो ऐसा अवसर फिर कहाँ मिलेगा ।" ऐसे विचार शरीर के प्रति असाधारण ममता उत्पन्न करते हैं और भयाक्रान्त एवं ममता ग्रस्त मनुष्य से महान् कर्तव्य धर्म का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालन हो नहीं सकता । जीवन को भस्मीभूत समझने वाला व्यक्ति बीमारों की सेवा करते हुए डरता है कि कहीं छूत लगकर मैं मर न जाऊँ, वह यात्रा करते डरता है कि कहीं किसी सवारी से दुर्घटना न हो जाय, वह चोर-डाकुओं और अत्याचारियों का मुकाबला करने से डरता है कि कहीं चोट न खा जाऊँ, ऐसे ही नाना प्रकार के भय मनुष्य को बेचैन बनाते रहते हैं और उसे भीरु, डरपोक, कायर, बुजदिल एवं आशंकित बना देते हैं । इस प्रकार निराशा और भय के झूले में झूलने वाले लोगों को "मैं अविनाशी हूँ" यह मंत्र जीवन संदेश देता है । वह कहता है-"उठो ! कर्तव्य पथ पर प्रवृत्त होओ । तुम्हारा जीवन अखण्ड है । कपड़े बदल जायेंगे, पर तुम नहीं बदलोगे, शरीर बदल जायेंगे पर जीवन नहीं बदलेगा । अपने ऊपर विश्वास करो, अपने जीवन पर विश्वास करो, आत्मा और परमात्मा पर विश्वास करो तुम्हें कोई नष्ट नहीं कर सकता । हे अजर, अमर, अविनाशी और अखण्ड आत्मा ! उठ, अपने कर्तव्य में प्रवृत्त हो, गाण्डीव उठा और धर्म युद्ध में पाञ्चजन्य का तुमुल नाद कर ! मृत्यु कोई वस्तु नहीं है । जीवन अखण्ड है । शरीर बदलने से हमारी मृत्यु कदापि नहीं हो सकती ।"

मैं जो पेड़ लगा रहा हूँ, उसका फल मुझे खाने को न मिलेगा-यह सोचना नास्तिकता है । अपने महान् कार्य को बिना किसी प्रकार का भय या संकोच किये आरंभ करो, कई जन्मों में तो वह पूरा हो ही जायगा । उसका फल तुम्हें ही मिलना है । अपने जीवन को अखंड समझो, अपने को अविनाशी मानो, निर्भय रहो, निर्द्वन्द विचरो-यह आध्यात्मवाद का पहला उपदेश है । आप इस पुण्य पथ पर आगे बढ़िये और सच्चे हृदय से अपनी अमरता पर विश्वास करिए ।

तीसरा पाठ

परिस्थितियों का जन्मदाता अपने आपको मानिए !

आध्यात्मवाद का दूसरा सिद्धांत है-"आत्म निर्भरता" । अपने ऊपर विश्वास करना अपनी शक्तियों पर विश्वास करना एक ऐसा दिव्य गुण है जो हर कार्य को करने योग्य साहस, विचार एवं योग्यता उत्पन्न करता रहता है । दूसरों के ऊपर निर्भर रहने से अपना बल घटता है और इच्छाओं की पूर्ति में अनेक बाधाऐं उपस्थित होती हैं । स्वाधीनता, निर्भयता और प्रतिष्ठा इस बात में है कि अपने ऊपर निर्भर रहा जाय, सफलता का सच्चा और सीधा पथ भी यही है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी हर एक वाह्य परिस्थिति की जिम्मेदारी दूसरों पर मत डालिए वरन् अपने ऊपर लीजिए । दुनियाँ को दर्पण के समान समझिए जिसमें अपनी ही सूरत दिखाई पड़ती है । दूसरे लोगों में जो अच्छाइयाँ-बुराईयाँ दिखाई पड़ती हैं, सामने जो प्रिय एवं अप्रिय परिस्थितियाँ आती हैं, उसका कारण कोई और नहीं वरन् आप स्वयं हैं और उनमें परिवर्तन करने की शक्ति भी किसी और में नहीं वरन् स्वयं आप में है ।

शास्त्रों में कहा गया है कि ब्रह्माण्ड की कुंजी पिण्ड के अन्दर है, हर व्यक्ति अपने लिए एक अलग संसार बनाता है और उसकी रचना उस पदार्थ से करता है जो उसके अन्दर होता है । वास्तव में संसार बिल्कुल जड़ है, उसमें किसी को सुख-दुःख पहुँचाने की शक्ति नहीं है । मकड़ी अपना जाला खुद बुनती है और उसमें विचरण करती है । आप अपने लिए अपना संसार स्वतंत्र रूप से बनाते हैं और जब चाहते हैं उसमें परिवर्तन कर लेते हैं ।

एक व्यक्ति क्रोधी है, उसे प्रतीत होगा कि सारी दुनियाँ उससे लड़ती-झगड़ती है, कोई उसे चैन से नहीं बैठने देता, किसी में भलमनसाहत है ही नहीं, जो आता है, उससे उलझता चला आता है । एक व्यक्ति झूठ बोलता है, उसे लगता है कि सब लोग अविश्वासी हैं, संदेह करने वाले हैं, किसी पर भरोसा ही नहीं करते । एक व्यक्ति नीच है, वह देखता है कि सारी दुनियाँ घृणा करने वाले, घमंडियों, स्वार्थियों से भरी हुई है, किसी में सहानुभूति है ही नहीं । एक व्यक्ति निकम्मा और आलसी है, उसे मालूम होता है कि दुनियाँ में काम है ही नहीं सब जगह बेकारी फैली हुई है, व्यापार नष्ट हो गया, नौकरियाँ नहीं है, लोग बहुत काम लेकर थोड़ा पैसा देना चाहते हैं । एक व्यक्ति बीमार है, उसे दिखाई पड़ता है कि दुनियाँ में सारे भोजन अस्वादिष्ट, हानिकर और नुकसान पहुँचाने वाले हैं । इसी प्रकार व्यभिचारी, लम्पट, मूर्ख, कंजूस, अशिक्षित, सनकी, गँवार, पागल, भिखारी, चोर तथा अन्यान्य मनोविकारों वाले व्यक्ति अपने लिए अलग दुनियाँ बनाते हैं । वे जहाँ जाते हैं, उनकी दुनियाँ उनके साथ जाती है ।

इसी प्रकार विद्वान, साधु, कर्मनिष्ठ, उत्साही, साहसी, सेवाभावी, उपकारी, बुद्धिमान और आत्म विश्वासी लोगों की दुनियाँ अलग होती है । बुरे व्यक्तियों को जो दुनियाँ बुरी मालूम होती थी, वही अच्छे व्यक्तियों के लिए अच्छी बन जाती है । सांसारिक पदार्थ जड़ हैं वे न तो किसी को सुख दे सकते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं और न दु:ख । मनुष्य एक प्रकार का कुम्हार है जो मिट्टी से अपनी इच्छानुसार बर्तन बनाता है । संसार किसी के लिए दु:ख का सेतु है, किसी के लिए सुख का । वास्तव में वह कुछ नहीं है । अपनी छाया ही संसार के दर्पण में प्रतिबिम्बित हो रही है । अपना दृष्टिकोण बदलने से दुनियाँ की सारी रूपरेखा बदल जाती है । हमारे विचार और कार्य जैसे होते हैं ठीक उसी के अनुरूप वाह्य परिस्थितियों में अन्तर आ जाता है ।

मनोविज्ञान शास्त्र बताता है कि मनुष्य में यह एक बड़ी भारी त्रुटि है कि वह अपनी भूल या न्यूनता को स्वीकार नहीं करता । अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेने को तैयार नहीं होता । अपने दोषों को दूसरों के ऊपर थोपने का प्रयास करके वह स्वयं निर्दोष बनता है । यह आत्म वंचना की वृत्ति इतनी सूक्ष्म होती है कि मोटी बुद्धि से वह पकड़ में नहीं आती । भूल करने वाले लोगों में से अधिकांश के मन में यह दृढ़ विश्वास होता है कि वे निर्दोष हैं और दूसरे लोग ही उस दोष के भागी हैं । मानव स्वभाव की यह कमजोरी, सत्य की खोज में बड़ी भारी बाधा है, सुख-शांति को मिटाकर क्लेश-कलह उत्पन्न करने वाली प्रधान पिशाचिनी है ।

हम मानते हैं कि दूसरों में भी दोष हैं और अनायास अप्रिय परिस्थितियाँ भी सामने आती हैं, पर काँटों से आसानी के साथ बच निकलने योग्य विवेक की आँखें भी तो मौजूद हैं । संसार तीम गुणों का बना हुआ है, इसमें अच्छाइयों के साथ बुराइयाँ भी हैं, उन बुराइयों से बच निकलना बुद्धिमत्ता का काम है । ऐसी बुद्धिमत्ता तब आती है जब 'आत्म निर्भरता' के दृष्टिकोण को अपना लिया जाता है ।

अमुक व्यक्तियों द्वारा मुझे सताया गया, अपमानित किया गया, ठगा गया, उपेक्षित किया गया-यह सोच कर उससे बदला लेने या दु:ख के घूंट पीने से पहले आपको यह विचार करना चाहिए कि इस सताये जाने, अपमामित किये जाने, ठगे जाने और उपेक्षित होने में हमारा अपना क्या दोष था ? सबसे पहले उस दोष को ढूँढ़ने और निकाल देने की आवश्यकता है, क्योंकि आज किसी प्रकार बदला ले लेने या मामले को दबा देने से काम न चलेगा, कल फिर वैसी ही परिस्थितियाँ पैदा होंगी, वह दोष यदि न निकाला गया तो आये दिन ऐसी ही अप्रिय घटनाऐं न्यौत-न्यौत कर बुलाता रहेगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्मयुद्ध में लगने वाले अघात या दैवी प्रकोप की कुछ थोड़ी सी घटनाओं को छोड़कर शेष समस्त घटनाओं पर अपना उत्तरदायित्व है । यदि संसार आपके साथ उचित व्यवहार नहीं करता, तो इसका कारण बाहर मत ढूँढ़िये वरन् अपने अन्दर तलाश कीजिए । एक हाथ से ताली नहीं बजती, दोनों हाथ जब टकराते हैं, तभी शब्द होता है यदि दूसरे लोग झगड़ालू हैं तो भी आप ऐसा अवसर न दें कि वह टकरावें तब निःसंदेह संघर्ष बहुत कुछ बच सकता है ।

आप किसी गुत्थी को सुलझाने के लिए दूसरों की सहायता ले सकते हैं, पर उनके ऊपर अबलम्बित मत रहिए । अपने पैरों पर खड़े हूजिए और आप अपनी कठिनाइयों को सुलझाने का प्रयत्न करिए । जब तक आप दूसरों पर आश्रित रहते हैं, यह समझते हैं कि हमारे कष्टों को कोई और दूर करेगा तब तक बहुत बड़े भ्रम हैं । जो उलझनें आपके सामने हैं उनका दुःखदायी रूप अपनी त्रुटियों के कारण है, उन त्रुटियों को त्यागकर आप स्वयं ही अपनी उलझनें सुलझा सकते हैं । जब आत्म विश्वास के साथ सुयोग्य भोग की तलाश करेंगे तो वह किसी न किसी प्रकार मिल कर ही रहेगा ।

जब मनुष्य आत्म निर्भरता के वीरतापूर्ण दृष्टिकोण को छोड़कर पराया मुँह ताकने की कायरता, क्लीवता और दीनता की अन्धकारमयी भूमिका में उतरता है तो वह बड़े दीन वचन बोलने लगता है । 'मैं क्या कर सकता हूँ, दूसरों ने मुझे जकड़ रखा है, रास्ते रोक रखे हैं ।' ऐसी शिकायतों में तीन चौथाई भाग झूठ होता है । भूत, पलीत, देवी, देवता, भाग्य, ईश्वर, ग्रह, नक्षत्र, समय, युग तथा और भी अनेक बहानों को पकड़ कर वह कहता है कि यही सब मेरे सुख-दुःख के कारण हैं । विपत्ति के समय वह देवी-देवताओं की मनौती मानता है । चाहता है कि कोई ऐसा देव दानव कहीं से उतर आये जो पलक मारते ही उन कठिनाइयों को हल कर दे । इस प्रकार की विचारधारा बेकार और भयंकर है । यह स्पष्ट है कि जो अपनी विपत्ति से आप लड़ने को तैयार नहीं होता, उसकी सहायता कोई दृश्य या अदृश्य शक्ति नहीं करती । सुनिये, कान खोलकर सुनिये । यदि आप कष्ट से बचकर आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं तो आत्म निर्भरता सीखिये, अपनी भुजाओं पर विश्वास कीजिए, अपनी बुद्धि को काम में लाइये और अपने पैरों पर खड़े हो जाइये । तभी आपकी इच्छी और आकांक्षायें पूर्ण हो सकेंगी ।

सारी समस्याओं को सुलझाने की कुंजी अपने अन्दर है । दूसरे लोगों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस बात की आशा करते हैं, उसकी योग्यता अपने अन्दर पैदा कीजिए तो बिना माँगे अनायास ही वह इच्छाऐं पूरी होने लगेंगी ।

आप चाहते हैं कि आपको बीमारी न सतावे, तो स्वास्थ्य के नियमों पर दृढ़तापूर्वक चलना आरम्भ कर दीजिए । आप चाहते हैं कि ऐशो-आराम उठावें तो धन कमाना आरम्भ कर दीजिए । आप चाहते हैं कि बहुत से मित्र हों तो अपना स्वभाव आकर्षक बनाइये । आप चाहते हैं कि लोग आपका लोहा मानें तो शक्ति संपादन कीजिए । आप चाहते हैं प्रतिष्ठा प्राप्त हो तो प्रतिष्ठा के योग्य गुणों को एकत्रित करिए । आप चाहते हैं कि दाम्पत्ति जीवन आनन्दमय हो तो पत्नी के हृदय में स्थान प्राप्त करने की योग्यता प्राप्त कीजिए । धन, बुद्धि, बल, विद्या चाहते हैं तो परिश्रम और उत्साह उत्पन्न करिये । जब तक अपने भीतर वे गुण नहीं हैं जिनके द्वारा मनोवांछाऐं पूरी हुआ करती हैं तब तक यह आशा रखना व्यर्थ है कि आपका मनोरथ सफल हो जायगा ।

बाहर की शक्तियाँ भी सहायता किया करती हैं, पर करती उन्हीं की हैं जो उसके पात्र हैं । एक मनुष्य सहायता की याचना के लिए जाता है, उधार या मुफ्त कोई वस्तु चाहता है तो उसे आसानी से मिल जाती है, देने वाला विश्वास करता है कि मेरी सहायता का वह सदुपयोग करेगा और तुरंत ही प्रसन्नतापूर्वक सहायता करने को उद्यत हो जाता है । एक दूसरा व्यक्ति भी सहायता माँगने जाता है पर उसे देने के लिए कोई तैयार नहीं होता, कारण यह नहीं कि पहले व्यक्ति का भाग्य अच्छा है, दूसरे का खोटा है या सहायता करने वाले दुष्ट हैं वरन् असली कारण यह है कि दूसरा व्यक्ति अपनी योग्यता और ईमानदारी उस प्रकार प्रमाणित नहीं कर सका जैसा कि पहले व्यक्ति ने की थी । सहायता न करने वालों को आपको गालियाँ देना बेकार है । इस दुनियाँ में अधिक योग्य को तरजीह देने का नियम सदा से चला आता है । किसान निठल्ले पशुओं को कसाई के हाथ बेच देता है और दुधारू तथा कामकाजी पशुओं को अच्छी खुराक देकर पालता-पोसता है । संसार में सुयोग्य व्यक्तियों को सब प्रकार सहायता मिलती है और अयोग्य को अपनी मौत मर जाने के लिए छोड़ दिया जाता है । माली अपने बाग के तन्दुरुस्त पौधों की खूब हिफाजत करता है और जो कमजोर होते हैं उन्हें उखाड़ कर उस जगह दूसरा बलवान पौधा लगाता है । ईश्वर की सहायता भी सुयोग्यों को मिलती है, माला जपने और मनौती मनाने पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भी अयोग्य बेचारा वहाँ से भी निराश लौटता है ।

संसार में सफलता लाभ करने की आकांक्षा के साथ अपनी योग्यताओं में वृद्धि करना भी आरम्भ कीजिए । आपका भाग्य किस प्रकार लिखा जाय ? इसका निर्णय करते समय विधाता आपकी आन्तरिक योग्यताओं की परख करता रहता है । उन्नति करने वाले गुणों को यदि अधिक मात्रा में जमा कर लिया गया है तो भाग्य में उन्नति का लेख लिखा जायगा और यदि उन्नायक गुणों को अविकसित पड़ा रहने दिया गया है, दुर्गुणों को, मूर्खताओं को अन्दर भर रखा गया है तो भाग्य की लिपि दूसरी होगी । विधाता लिख देगा कि "इसे तब तक दुःख दुर्भाग्यों में ही पड़ा रहना होगा जब तक कि योग्यताओं का सम्पादन न करे ।" अपने भाग्य को जैसा चाहे वैसा लिखना अपने हाथ की बात है । यदि आप आत्म निर्भर हो जावें । जैसा होना चाहते हैं, उसके अनुरूप अपनी योग्यताऐं बनाने में प्रवृत्त हो जावें तो विधाता को विवश होकर आपकी मन मर्जी का भाग्य लिखना पड़ेगा ।

'अमरता' पर विश्वास करने के बाद आध्यात्मवाद की दूसरी शिक्षा यह है कि आप आत्मा को वाह्य परिस्थितियों का निर्माता-केन्द्रबिन्दु मानिए । जो घटनाऐं सामने आ रही हैं, उनकी प्रिय-अप्रिय अनुभूति का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लीजिए । अपने को जैसा चाहें वैसा बना लेने की योग्यता अपने में समझिए । अपने ऊपर विश्वास कीजिए । किसी और का आसरा मत ताकिए । बिना आपके निजी प्रयत्न के, योग्यता सम्पादन के बाहरी सफलता प्राप्त न होगी, यदि होगी तो उसका लाभ बहुत थोड़े समय में समाप्त हो जायगा और पुनः वही दशा उपस्थित होगी, जिसकी कि अपनी औकात है । उत्साह, लगन, दृढ़ता, साहस, धैर्य, परिश्रम-यह इन छः गुणों को सफलता का अग्रदूत माना गया है । इन दूतों का निवास स्थान आत्म विश्वास में है । अपने ऊपर भरोसा करेंगे तो यह गुण भी उत्पन्न होंगे अन्यथा किसी देव दानव की कृपा से सट्टा-लाटरी फल जाने, बंभोला की भभूत से छप्पन करोड़ की चौथाई मिल जाने, वैद्यजी की दवा-दारू खाकर भीमसेन बन जाने, वशीकरण मंत्र से तरुणी स्त्रियाँ खिंची चली आने, गंगा मैया की कृपा से बेटा हो जाने, साईं जी के ताबीज से शादी हो जाने के स्वप्न देखते रहिए और उम्मीदों की दुनियाँ में तबियत बहलाते रहिए । बेशऊरों का माल मसखरे उड़ाते हैं, आप भी मसखरों के चंगुल में फँस कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ठगाते रहिए, समय बर्वाद करते रहिए पर प्रयोजन कुछ भी सिद्ध न होगा । ईश्वर के राज्य में ऐसी अन्धी नहीं लग रही है कि पसीना बहाने वाले परिश्रमी टापते रहें और शेखचिल्लियों की बन आवे ।

''उद्धरेत् आत्मानात्मानम्'' की शिक्षा देते हुए गीता ने स्पष्ट कर दिया है कि यदि अपना उत्थान चाहते हो तो उसका प्रयत्न स्वयं करो । दूसरा कोई भी आपकी दशा को सुधार नहीं सकता । श्रेष्ठ पुरुषों का थोड़ा सहयोग मिल सकता है पर रास्ता अपने को ही चलना पड़ेगा, यह मंजिल दूसरे के कंधे पर बैठकर पार नहीं की जा सकती । यह लोक और परलोक किसी दूसरे की कृपा दृष्टि से सफल नहीं हो सकता, यह सब तो खुद ही करना पड़ेगा, स्वयं ही अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा । अपने पेट के पचाये बिना अन्न हजम नहीं हो सकता, अपनी आँखों की सहायता बिना दृश्य दिखाई नहीं दे सकता, इसी प्रकार अपने प्रयत्न बिना उन्नत अवस्था को भी प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

दु:ख, शोक, रोग, दरिद्र, बंधन, चिन्ता का हेतु अपने अन्दर ही छिपा हुआ है । भीतर की गाँठ खोल देने से सारी गुत्थियाँ खुल जाती हैं । अफ्रीका में बन्दर पकड़ने वाले ऐसा करते हैं कि छोटे मुँह के घड़े में चने भरकर रख देते हैं । घड़ा रस्सी से मजबूत बँधा होता है। बंदर चना निकालने के लिए अपना हाथ घड़े में डालता है और मुट्ठी भर कर जब हाथ बाहर निकालता है तो मुट्ठी घड़े के मुँह में अटक जाती है । बन्दर समझता है कि घड़े ने मुझे पकड़ लिया । वह जोर से हाथ खींचता है पर मुट्ठी बाहर नहीं निकलती, अब उसे पक्का विश्वास हो जाता है कि घड़े ने मुझे फँसा लिया । इतने में शिकारी आ जाता है और उसे पकड़ लेता है । हम लोग बन्दर की बेवकूफी पर हँसते हैं कि-''मूर्ख को इतना भी नहीं सूझा कि बेचारा बेजान घड़ा मुझे क्या पकड़ सकता है, मैं स्वयं भूल कर रहा हूँ, अपनी भूल सुधार लूँ, मुट्ठी छोड़ दूँ तो घड़े के चंगुल से मुक्त हो सकता हूँ । नादान ने जरा सी भूल के कारण अपनी जान गँवा दी ।''

बन्दर की बेवकूफी पर आपका हँसना उचित है क्योंकि उसकी समझ हँसी के ही योग्य है । परन्तु उन समझदार और बुद्धिमान कहे जाने वाले मनुष्यों की बुद्धि पर और भी अधिक हँसना चाहिए जो विद्या-बुद्धि का दावा करते हुए भी ठीक उस बन्दर के ही उदाहरण बनते हैं और उसके जैसे ही आचरण करते हैं । समय बुरा है, संसार खराब है, परिस्थितियाँ मुझे सताती हैं, दुर्भाग्य और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुःख-दरिद्र ने मुझे घेर रखा है, इस प्रकार का विचार ठीक उस बन्दर के विचारों से मिलता-जुलता है जो यह समझता था कि मुझे घड़े ने पकड़ रखा है । अगर वह मुट्ठी को छोड़ देता तो दूसरे ही क्षण छुटकारा पा सकता था, यदि आप भी अपने में उचित परिवर्तन कर लें तो उन बेचैन करने वाली मनोवेदनाओं से मुक्त हो सकते हैं ।

मनुष्य परमात्मा का सर्वप्रिय पुत्र है उसे इतनी स्वाधीनता, क्षमता और योग्यता स्वभावतः प्राप्त है कि अपने लिए उपयोगी एवं अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण एवं आविर्भाव कर सके । परमात्मा ने मनुष्य को बेवश, अयोग्य, पराधीन, दुर्बल-निर्बल बनाकर नहीं भेजा है कि वह दूसरों के आश्रित रहे, दूसरों की कृपा पर अवलम्बित रहे । वह अपने भाग्य का निर्माता आप है । अपने लिए भली-बुरी स्थिति चुनने का और उसे उपलब्ध करने का एक मात्र अधिकार केवल उसी के हाथ में है ।

जैसी भी भली या बुरी परिस्थितियाँ हमारे सामने आती हैं, वह किसी देवी-देवता के शाप-वरदान से, ग्रह-नक्षत्र के हेर-फेर या किसी अन्य कारण से नहीं आती, उसके मूल उत्पादक हम स्वयं ही होते हैं । जैसे विचारों को अपनाया जाता है, जैसे स्वभाव एवं गुणों का निर्माण किया जाता है, जैसा दृष्टिकोण होता है, जिस प्रकार की इच्छा, आकांक्षा, नीति और कार्य प्रणाली होती है, उसी के अनुसार हमारा ढाँचा तैयार होता जाता है । परिस्थितियाँ और घटनाऐं उन दोनों की छाया मात्र हैं । चटोरे, व्यभिचारी एवं असंयमी व्यक्ति आये दिन बीमार पड़ते हैं । आलसी, निरुद्योगी व्यक्ति निर्धन रहते हैं । कडुए एवं खोटे स्वभाव वाले चारों ओर शत्रुता, कटुता, असहयोग एवं तिरस्कार का वातावरण देखते हैं । लोभी ठग जाते हैं । कायर सताये जाते हैं । असावधान घाटा दे बैठते हैं । मोहग्रस्त बहुत रोते-चिल्लाते हैं । डरपोकों को चिन्ता बेचैन किये रहती है । इसी प्रकार अच्छे गुण, विचार, दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम वाले व्यक्ति सब प्रकार की सुख-सामग्रियों से सम्पन्न होकर सुखी जीवन व्यतीत करते हैं । दुःख और सुख, बड़प्पन और लघुता, हानि और लाभ अपनी निज की योग्यता, चतुरता और क्षमता के ऊपर निर्भर है और इन तीनों को मनुष्य चाहे तो प्रयत्न करके बहुत उन्नत कर सकता है तथा प्रमाद में पड़कर इन स्वाभाविक शक्तियों से हाथ धो बैठ सकता है । संसार में जितने भी सुखी या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दु:खी व्यक्ति हैं अपनी निज की कार्य पद्धति के अनुसार हैं । उनने स्वयं ही अपने लिए वैसी परिस्थिति तैयार की है ।

भाग्य, प्रारब्ध, दैव, तकदीर, ईश्वरेच्छा आदि कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो मनुष्य के अपने प्रयत्न से बाहर की बात हो । कल का प्रयत्न कर्म आज भाग्य के रूप में सामने आता है । यदि आज हम दुष्कर्म न करें तो भविष्य में कोई शक्ति हमारे भाग्य को बुरा नहीं बना सकती, यदि आज हम अनुचित कार्य कर रहे हैं तो संसार की कोई भी शक्ति हमें भविष्य में भाग्यशाली नहीं बना सकती । ईश्वर जो कुछ करता है, हमारे कर्मों के आधार पर करता है । वह पूर्ण न्यायी एवं कठोर न्यायाधीश है । वह कर्मों का फल देने में तनिक भी रियायत नहीं करता । भाग्य, तकदीर, दैव, प्रारब्ध किसी के दिये हुए अभिशाप या वरदान नहीं हैं । भूतकाल के कर्म ही आगे चलकर भाग्य के रूप में प्रकट होते हैं इसलिए तकदीर भी मूलत: अपने ही हाथ की बात है ।

आध्यात्मवाद के पथिकों को दूसरा मंत्र यह हृदयंगम करना चाहिए कि हम अपने भाग्य के स्वयं निर्माता हैं, जैसे हम होंगे, वैसे ही अवसर प्राप्त होंगे । हमारा भविष्य शर्तिया हमारे हाथ में है, इस सत्य को हृदयंगम कर लेने के पश्चात् इधर-उधर देखने की अपेक्षा अपने आपको बनाने की, अपने परिमार्जन की अभीष्ट वस्तुओं को प्राप्त करने के उद्योग की आवश्यकता अनुभव होती है । आत्म निर्भरता, आत्मावलम्बन, आत्म विश्वास, आत्म चिन्तन, आत्म निर्माण- यह पाँच तथ्य ऐसे हैं, जिन्हें स्वीकार किये बिना कोई व्यक्ति आत्मोन्नति नहीं कर सकता । पराधीन, परावलम्बी को इस लोक और परलोक कहीं भी सुख नहीं मिल सकता । इसलिए परमानन्द की प्राप्ति के इच्छुकों को आत्म निर्भर होने की आवश्यकता है ।

चौथा पाठ

शक्ति संचय के पथ पर आरूढ़ हूजिये

अध्यात्मवाद की तीसरी शिक्षा है-"शक्ति संचय ।" बलवान्, शक्तिवान्, समर्थ, सम्पन्न, सिद्ध बनने का आध्यात्मिक पुरुष सदा ही प्रयत्न करते हैं । योगी पुरुष आसन और प्राणायाम द्वारा नेति, धोति, बज्रोली, न्योलि, कपालभाति आदि द्वारा शरीर का शोधन, परिमार्जन एवं दीर्घ जीवन प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनेक प्रकार की साधनाओं द्वारा अष्टसिद्धि, नविनिद्धि के सम्पन्न होने का प्रयत्न करते हैं । सिद्ध पुरुष अनेक प्रकार की विभूतियों से सम्पन्न होते हैं । आत्मबल, ब्रह्मबल प्राप्त करके ही वे अपना तथा दूसरों का कल्याण करते हैं । शक्तिहीन पुरुष दूसरों का भला नहीं कर सकते, अपना भला नहीं कर सकते यहाँ तक कि जीवन निर्वाह तक ठीक प्रकार नहीं कर सकते ।

निर्बलता एक बहुत बड़ा पातक है । अशक्त व्यक्ति अपना बुरा प्रभाव जिन निकटवर्ती एवं कुटुम्बी जनों पर डालते हैं उनकी मनोवृत्ति भी उसी ढाँचे में ढलने लगती है । इसी प्रकार यह छूत की बीमारी एक से दो में, दो से दस में और दस से सैकड़ों में फैलती चली जाती है । कायर, आलसी, निकम्मे, निर्बल, भिखारी, दीन, दास वृत्ति के लोग अपने समान औरों को भी बना लेते हैं ।

निर्बल व्यक्ति जीवन भर दु:ख भोगते हैं, जिसका शरीर निर्बल है, उसे बीमारियाँ सताती रहेंगी । सांसारिक सुखों से उसे वंचित रहना पड़ेगा । इन्द्रियाँ साथ न देंगी तो सुखदायक वस्तुऐं पास होते हुए भी उनके सुख को प्राप्त न किया जा सकेगा । जो आर्थिक दृष्टि से निर्बल है वह जीवनोपयागी वस्तुऐं तक जुटाने में सफल न हो सकेगा, सुखी और सफल मनुष्यों के समाज में उसे दीन, हीन, गरीब समझकर तिरष्कृत किया जायगा । अनेक स्वाभाविक आकांक्षाओं को उसे मन मारकर मसलना पड़ेगा ।

संसार में पाप, अनीति एवं अत्याचार की वृद्धि का अधिकांश दोष निर्बलता पर है । कमजोर भेड़ और बकरियों को माँसाहारी मनुष्य और पशु उदरस्थ कर जाते हैं पर भेड़िये का माँस पकाने की किसी की इच्छा नहीं होती । कमजोरी में एक ऐसा आकर्षण है कि उससे अनुचित लाभ उठाने की हर एक की इच्छा हो जाती है । नन्हे-नन्हे अदृश्य रोग कीटाणु जो हवा में उड़ते फिरते हैं उन्हीं पर आक्रमण करते हैं जिन्हें कमजोर देखते हैं । हम अपने चारों ओर आँख फैलाकर देख सकते हैं कि कमजोर पर हर कोई हमला करने की सोचता है । जैसे गंदगी इकट्ठी कर लेने से मक्खियाँ अपने आप पैदा हो जाती हैं या दूर से इकट्ठी होकर वहीं आ जाती है, इसी प्रकार कमजोरों से अनुचित लाभ उठाने के लिए घर के, पास-पड़ौस के तथा दूर देश के व्यक्ति एकत्रित हो जाते हैं या वैसे लोग पैदा हो जाते हैं । यदि कमजोरी का अन्त हो जाय तो अत्याचार या अन्याय का भी अन्त निश्चित है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्बल मनुष्य स्वयं अपने आप में स्वस्थ विचारधारा धारण नहीं कर सकता । कारण कितने ही हैं जैसे-(१) शारीरिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति के मस्तिष्क को पर्याप्त खून नहीं पहुँचता इसलिए वह जरा सी बात में उत्तेजित, चिन्तित, भयभीत, कायर एवं किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाता है । ऐसी अस्थिर अवस्थाओं में मस्तिष्क सही निर्णय नहीं कर सकता-वह अन्धकारपूर्ण पथ की ओर अग्रसर हो जाता है । (२) पुरुषार्थ शक्ति के अभाव में वह अभीष्ट वस्तुओं, सम्पदाओं को प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त होता है । (३) अपनी हीन दशा और दूसरों की अच्छी दशा देखकर उसके मन में एक कसक, आत्मग्लानि, कुढ़न एवं ईर्ष्या उत्पन्न होती है, ऐसी स्थिति में दुर्भाग्य के निराशाजनक भाव या जलन की प्रतिहिंसा के घातक भाव मस्तिष्क में उठते रहते हैं । (४) अभावों के कारण जो कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं उनसे विचलित होकर मनुष्य अधर्म पर उतारू हो जाता है । (५) निर्बलता एक प्रकार का रोग है उस रुग्ण अवस्था में विचार भी रोगी हो जाते हैं । उच्च कोटि के आध्यात्मिक विचार उस अवस्था में नहीं रह पाते । शास्त्रकार कहते हैं- "क्षीणानरा: निष्करुणा भवन्ति" अर्थात् दुर्बल मनुष्य निर्दय हो जाते हैं ।

इन कारणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि भौतिक उन्नति ही नहीं आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी बलवान् बनना आवश्यक है । एक प्रसिद्ध कहावत है कि- "शक्ति का प्रयोग रोकने के लिए शक्ति का प्रदर्शन जरूरी है ।" प्रकृति का, मनुष्यों का, रोगों का, शैतान का आक्रमण अपने ऊपर न हो इसको रोकने का एक मात्र तरीका यह है कि हम अपने शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक बल को इतना बढ़ा लें कि उसे देखते ही आक्रमणकारी पश्त हो जाँय । बल का संचय अनेक आने वाली विपत्तियों से अनायास ही बचा देता है । सबलता एक मजबूत किला है जिसे देखकर शत्रुओं के मनसुबे धूल में मिल जाते हैं ।

शाक्त लोग अष्टभुजी दुर्गा की पूजा करते हैं । भवानी शक्ति की मूर्तियों में हम उनकी आठ भुजाऐं देखते हैं । इनका तात्पर्य है कि शक्ति के आठ साधन हैं-(१) स्वास्थ्य, (२) विद्या, (३) धन, (४) व्यवस्था, (५) संगठन, (६) यश, (७) शौर्य, (८) सत्य । इन आठों के सम्मिलन से एक पूर्ण शक्ति बनती है, इन शक्तियों में से जिसके पास जितना भाग होगा, वह उतना ही शक्तिवान् समझा जायगा ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(१) स्वास्थ्य-स्वास्थ्य की महत्ता हम सब जानते हैं कि वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मूल है । अस्वस्थ मनुष्य तो इस पृथ्वी का एक भार है । जो दूसरों के कष्ट का कारण बनकर अपनी सांसें पूरी करता है । सच्चे जीवन का स्वाद लेने से और मनुष्यता के उत्तरदायित्वों को पूरा करने से वह सर्वथा वंचित रह जाता है । किसी मार्ग में उन्नति करना तो दूर, उसे प्राण धारण किये रहना भी बड़ा कठिन हो जाता है । स्वास्थ्य सर्वप्रथम और सर्वोपरि बल है । इस बल के बिना अन्य सब बल निरर्थक हैं । इसलिए स्वस्थता की ओर सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है ।

अस्वस्थ होने के थोड़े से कारण है, यदि हम उनकी ओर सतर्क रहें तो बीमारी और कमजोरी से बचकर स्वाभाविक स्वस्थता प्राप्त कर सकते हैं । स्वास्थ्य की ओर पर्याप्त ध्यान न देना, निरोगता में पूरी दिलचस्पी न लेना, तन्दुरुस्ती के खराब होने का सबसे बड़ा कारण है । रुपया कमाने में, करोबार-व्यापार में या अन्यान्य अनेक कामों में जितनी पैनी दृष्टि से, होशियारी और दिलचस्पी से काम करते हैं, यदि उसका दसवाँ भाग भी तन्दुरुस्ती की ओर ध्यान दिया जाय तो दुर्बल होने की नौबत न आवे । आमतौर से लोग शरीर को आराम देने और सजाने की फिक्र तो करते हैं, इन्द्रिय भोगों के साधन जुटाते हैं पर यह नहीं सोचते कि चिरस्थायी स्वास्थ्य और दीर्घजीवन किस प्रकार प्राप्त हो सकता है । यदि हम धनी बनने की इच्छा की भांति स्वस्थ एवं दीर्घजीवी बनने की भी इच्छा करें तो अवश्य ही सफल मनोरथ हो सकते हैं । धनी बनने से स्वस्थ बनना सुगम है ।

स्वाद, फैशन या आराम की ओर ध्यान न देकर आरोग्य की दृष्टि से हमें अपना जीवन क्रम बनाना चाहिए । प्रातःकाल जल्दी उठना, रात को जल्दी सोना, नियमित व्यायाम, त्वचा को खूब रगड़कर पूरा स्नान, मालिश, मलों की भली प्रकार सफाई, चटोरेपन को बिल्कुल तिलांजलि देकर सात्विक मन से, खूब चबाकर, प्रसन्नतापूर्वक भूख से कम भोजन करना, सामर्थ्य के अनुसार श्रम, चिन्ता से बचाव, वीर्य रक्षा आदि बातों में सावधानी बरती जाय तो स्वस्थता परछाईं की भांति साथ रहेगी । तन्दुरुस्ती हकीम डाक्टरों की दुकानों में या रंग-बिरंगी शीशियों में नहीं है वरन् आहार-विहार की सात्विकता एवं सावधानी में है । आडम्बरी, कृत्रिम, चटोरे, प्रकृति विरुद्ध, आलसी, रहन-सहन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से हम रोगी बनते हैं, उसे परित्याग करके यदि सादा, सीधी, सरल और प्रकृति अनुकूल जीवन क्रम बनाया जाय तो स्वस्थता निश्चित रूप से हमारे साथ रहेगी ।

(२) विद्या-विद्या के दो भाग हैं-एक शिक्षा, दूसरी विद्या । सांसारिक जानकारी को शिक्षा कहते हैं जैसे-भाषा, भूगोल, गणित, इतिहास, चिकित्सा, व्यापार, शिल्प, साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, नीति, न्याय-व्यवस्था आदि । विद्या मनुष्यता के कर्तव्य और उत्तरदायित्व को हृदयंगम करने को कहते हैं । धर्म, अध्यात्म, शिष्टाचार, सेवा, पुण्य, परमार्थ, दया, त्याग, सरलता, सदाचार, संयम, प्रेम, न्याय, ईमानदारी, ईश्वर परायणता, कर्तव्य भावना प्रभृत्ति वृत्तियों का जीवन में घुल मिल जाना विद्या है । शिक्षा और विद्या दोनों को ही प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए । शिक्षा से सांसारिक जीवन की श्रीवृद्धि होती है और विद्या से आत्मिक जीवन में सुसम्पन्नता आती है ।

बौद्धिक विकास के लिए जिज्ञासा की सबसे अधिक आवश्यकता है । जिसके मन में जानने की इच्छा उत्पन्न होती है, अनेक तर्क-वितर्क उठते हैं, चिन्तन, मनन और विवाद करने में जिसे रस आता है, जो अपनी जानकारी बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहता है, जिसे ज्ञान संग्रह का शौक है, जो ज्ञानवान् बनने के महत्व और आनंद से परिचित है वह नित्यप्रति अधिक ज्ञानवान् होता जायगा । ज्ञानवान् बनने के अनेक साधन उसे पग-पग पर प्राप्त होते रहेंगे । मूढमति मनुष्यों को जहाँ कोई "खास बात" नहीं दिखाई पड़ती, जिज्ञासु व्यक्ति की सूक्ष्म दृष्टि वहाँ भी बहुत सी जानने योग्य बातें ढूँढ़ निकालता है । ज्ञानवान् बनने की तीव्र आकांक्षा हुए बिना मस्तिक में वे सूक्ष्म शक्तियाँ संचित नहीं हो सकती जिनके आधार पर शिक्षा और विद्या की प्राप्ति हुआ करती है । "अथातो ब्रह्म जिज्ञासा" के सूत्रकार ने ज्ञान साधना का प्रथम उपाय जिज्ञासा को बताया है । जिज्ञासु होना विद्वान् होने का पूर्ण रूप है ।

पर्यटन, यात्रा, समाचार पत्रों को पढ़ना, विचारपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन, सत्संग, आम लोगों की मनोवृत्तियों का अध्ययन, घटनाओं पर विचार और उनका निरूपण एवं अनुभव संपादन में रुचि लेने वाले मनुष्य बुद्धिमान हो जाते हैं । जो अपनी भूलों को ढूँढ़ने और सही निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए हठधर्मी से बचाकर अपने मस्तिष्क को खुला रखते हैं वे आवश्यक एवं उपयोगी ज्ञान को पर्याप्त मात्रा में एकत्रित कर लेते हैं । समर्थक और विरोधी दोनों तथ्यों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समझने और उनकी विवेचना करने के लिए जो लोग प्रस्तुत रहते हैं वे भ्रम से, अज्ञान से बचकर वास्तविकता तक पहुँच जाते हैं । अपनी जानकारी की अल्पता को समझना और अधिक मात्रा में एवं अधिक वास्तविक ज्ञान को प्राप्त करने की निरंतर चाह रखना, मनुष्य को क्रमशः ज्ञानवान् बनाती जाती है । ज्ञान वृद्धि को प्राप्त करने के अवसरों को जो लोग तलाशते रहते हैं और वैसे अवसर मिलने पर उनका समुचित लाभ उठाते हैं, उनकी विद्या दिन-दिन घटती जाती है ।

(३) धन–समय के प्रभाव से आज पैसे का मनुष्य जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है । मनुष्य की लघुता, महानता अब पैसे के पैमाने से नापी जाने लगी है । पैसे के द्वारा सबकी सुख-सामग्रियाँ, सब प्रकार की योग्यता और शक्तियाँ खरीद ली जाती हैं और जो अनुचित, अत्यधिक महत्व पैसे को प्राप्त है, उनकी ओर ध्यान न दिया जाय तो भी इतना तो मानना पड़ेगा कि पैसे की आवश्यकता हर एक को है । भोजन, वस्त्र एवं मकान की जरूरत पड़ती है । अतिथि सत्कार, परिवार का भरण-पोषण, बच्चों की शिक्षा, विवाह, चिकित्सा, दुर्घटना, अकाल, आपत्ति, यात्रा आदि के लिए थोड़ा बहुत पैसा हर सद्ग्रहस्थ के पास रहना आवश्यक है ।

धन उपार्जन की अनेक प्राणाली संसार में प्रचलित हैं । उनमें से व्यापार, उत्पादन एवं निर्माण की प्रणाली सबसे उत्तम है । शिल्प, वाणिज्य, कला-कौशल, कृषि, गोपालन, दलाली आदि के द्वारा आसानी से पैसा पैदा किया जा सकता है । नौकरी बिना पूँजी वाले और ढीले स्वभाव वालों का सहारा है । ऐसे ही किसी उत्तम कार्य से जीविका उपार्जित करनी चाहिए । विश्वस्तता, मधुर व्यवहार, परिश्रम, ईमानदारी, अच्छी चीज, वायदे की पाबन्दी, सजावट, विज्ञापन एवं मितव्ययता के आधार पर हर व्यक्ति अपने करोबार में वृद्धि कर सकता है । नौकरी, उत्पादन, निर्माण, व्यापार सभी कार्यों में इनके आधार पर आमदनी और मजबूती बढ़ सकती है । न्यायोचित आधार पर समुचित जीविका प्राप्त कर लेना कुछ कठिन नहीं है ।

थोड़े प्रयत्न में अधिक धन कमाने के लिए लिए लोग चोरी, डकैती, लूट, रिश्वत, ठगी, उठाईगीरी, बेईमानी, धोखा. मिलावट, विश्वासघात, जुआ, सट्टा, लाटरी, अन्याय, शोषण, अपहरण आदि नीच-निंदित मार्गों का आश्रय ग्रहण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते हैं । इस प्रकार का धन कमाने में लोक निन्दा, राजदण्ड, शत्रुता, घृणा, प्रतिहिंसा का भय तो प्रत्यक्ष ही है । इसके अतिरिक्त इस प्रकार झटके का पैसा बुरी तरह अपव्यय होता है । जो पैसा पसीना बहाकर, किफायतशारी से नहीं जमा किया गया है, उसके खर्च होने में कुछ दर्द नहीं होता । चोर-जुआरी, ठग इस हाथ विपुल धन कमाते हैं और उस हाथ होली में जलाकर स्वाहा कर देते हैं । इस प्रकार के अपव्यय से अनेक पाप, दुर्गुण एवं बुरे उदाहरण उत्पन्न होते हैं । सबसे खास बात यह है कि ऐसा पैसा बीमारी, मुकदमा, चोरी, व्यसन आदि कुमार्गों में नष्ट हो जाता है । यदि बच भी रहे तो कुकर्मी पिता के उत्तराधिकारी ऐसे कुकर्मी निकलते हैं कि उस पैसे की होली में तापे बिना उन्हें चैन नहीं पड़ता ।

इन सब बातों पर ध्यान रखते हुए परिश्रम पूर्वक ईमानदारी के साथ उचित मार्गों से धन कमाना चाहिए और किफायतशारी से कुछ बचाने का प्रयत्न करना चाहिए । सही मार्ग से धनी बनना प्रशंसनीय है । धन को जोड़-जोड़कर विशाल राशि जमा करने में नहीं वरन् उसका ठीक समय पर आवश्यक एवं उचित उपयोग कर लेने में बुद्धिमानी है । धन को विवेकपूर्वक कमाना चाहिए और विचारपूर्वक खर्च करना चाहिए तभी धन की शक्ति का वास्तविक लाभ प्राप्त किया जा सकता है ।

(४) व्यवस्था-व्यवस्था बहुत बड़ी शक्ति है। बड़ी-बड़ी सफलताऐं प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अच्छा व्यवस्थापक होना चाहिए । जो व्यक्ति कार्य को पूरा करने का समुचित प्रबन्ध कर सकता है वह बहुत बड़ा जानकार है । धनी, विद्वान् और स्वस्थ पुरुष अनेक स्थानों पर असफल रहते देखे गये हैं पर चतुर प्रबन्धक स्वल्प साधनों से बड़े-बड़े कार्यों के लिए सरंजाम जुटा डालते हैं और अपनी हिम्मत, चतुरता, बुद्धिमत्ता एवं व्यवस्था के बल पर उन्हें पूरा कर लेते हैं ।

(अ) दूसरों पर प्रभाव डालना, (ब) उपयोगी मनुष्यों का सहयोग एकत्रित करना, (स) काम की ठीक योजना बनाना, (द) नियमित कार्य प्रणाली का संचालन करना, (ह) रास्ते में आने वाली कठिनाइयों का निराकरण करना-यह पाँच गुण व्यवस्थापकों में देखे जाते हैं । वे मधुर भाषण, शिष्टाचार, सद्व्यवहार, लोभ, भय आदि से दूसरों को प्रभावित करना जानते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुपयोगी, अयोग्य लोगों की उपेक्षा करके काम के आदमियों को सहयोग में लेते हैं । लाभ और हानि के हर एक पहलू को वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अनुभव और आँकड़ों के आधार पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने के पश्चात् वे अपने काम की योजना बनाते हैं । समय की पाबन्दी, नियमितता, ठीक समय पर ठीक कार्य करना, स्वच्छता, निरालस्यता एवं जागरूकता उनके स्वभाव का एक अंग बन जाती है । दोषों को वे बारीकी से ढूँढ़ लेते हैं और उन्हें हटाने के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं । बदलती हुई परिस्थितियों के कारण जो खतरे आते हैं, उन्हें रोकने एवं शमन करने पर उनका पूरा ध्यान रखते हैं । सफल व्यवस्थापक में इस प्रकार के गुण होते हैं, उनकी सूझबूझ व्यवहारिक होती है ।

निरालस्यता, जागरूकता, स्वच्छता, नियमितता, पाबन्दी, मर्यादा का ध्यान रखने से मनुष्य के विचार और कार्य व्यवस्थित होने लगते हैं और वह धीरे-धीरे अपने क्षेत्र में एक कुशल व्यवस्थापक बन जाता है । ऐसे आदमी का दुनियाँ लोहा मानती है, सफलता उसका पानी भरती है ।

(५) संगठन–शास्त्रकारों ने "संघशक्ति कलौयुगे" सूत्र में वर्तमान समय में संघशक्ति-संगठन, एकता को प्रधान शक्ति माना है । जिस घर में, कुटुम्ब में, जाति में, देश में एकता है, वह शत्रुओं के आक्रमण से बचा रहता है एवं दिन-दिन समुन्नत होता है । फूट के कारण जो बर्बादी होती है, वह जग जाहिर है । अच्छे मित्रों का, सच्चे मित्रों का समूह एक दूसरे की सहायता करता हुआ आश्चर्यजनक उन्नति कर जाता है । तन बल, धन बल, भुज बल की भांति जन बल भी महत्वपूर्ण है । जिनके साथ दस आदमी हैं, वह शक्तिशाली है । जन शक्ति द्वारा बड़े दुस्तर कार्यों को आसान बना लिया जाता है ।

घर में और बाहर हर जगह मित्रता बढ़ानी चाहिए । समानता के आधार पर परस्पर सहायता करने वाला गुट बनाना चाहिए, उसे बढ़ाना और मजबूत करना चाहिए । संघ शक्ति से, जन बल से, जीवन विकास में असाधारण सहायता मिलती है । संगठित गौओं के झुण्ड सामूहिक हमला करके बलवान् वाघ को मार भगाता है ।

आप सामूहिक प्रयत्नों में अधिक दिलचस्पी लीजिए । अकेले माला जपने की अपेक्षा संध्या, भजन, कीर्तनों में सामूहिक रूप से सम्मिलित होना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पसंद कीजिए । अकेले कसरत करने की अपेक्षा सामूहिक खेलों में भाग लेना और अखाड़ों में जाना ठीक समझिये । सामजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं मनोरंजन संस्थाओं में भाग लीजिए यदि आपके यहाँ वे न हों तो स्थापित कीजिए, अपने जैसे समान विचार के लोगों की एक मित्र मंडली बना लीजिए और आपस में खूब प्रेमभाव बढ़ाइये । घर में और बाहर सच्ची मैत्री का, एकता का बढ़ाना एक महत्वपूर्ण वास्तविक लाभ है ।

(६) यश–नीतिकारों का कहना है कि जिसका यश है, उसी का जीवन जीवन है । प्रतिष्ठा का, आदर का, विश्वास का, श्रद्धा का संपादन करना सचमुच एक बहुत बड़ी कमाई है । देह मर जाती है पर यश नहीं मरता । ऐतिहासिक सत्पुरुषों को स्वर्ग सिधारे हजारों वर्ष बीत गये परन्तु उनके पुनीत चरित्रों का गायन कर असंख्यों मनुष्य अब भी प्राप्त करते हैं ।

जो व्यक्ति अपने अच्छे आचरण और अच्छे विचारों के कारण, सेवा, साहस, सचाई एवं त्याग के कारण लोगों की श्रद्धा प्राप्त कर लेता है उसे बिना माँगे अनेक प्रकार से प्रकट और अप्रकट सहायताऐं प्राप्त होती रहती हैं । यशस्वी व्यक्ति पर कोई संकट आता है तो उसका निवारण करने के लिए अनेक व्यक्ति आश्चर्यजनक सहायता करते हैं, इस प्रकार उन्नति के लिए यथोचित सहयोग प्राप्त करते हैं । सुख्याति द्वारा जिनने दूसरों के हृदयों को जीत लिया है इस संसार में यथार्थ में वे ही विजयी हैं ।

प्रतिष्ठा आत्मा को तृप्त करने वाली दैवी सम्पत्ति है । बाजार में ईमानदारी एवं सच्चाई के लिए जिसकी ख्याति है, वही व्यापारी स्थायी लाभ कमाता है । यशस्वी पर हमला करके अपने आपको सबकी निगाह में गिरा लेने के लिए कोई विरले ही दुस्साहस करते हैं । यह यश सद्गुणों से, सत्कार्यों से, सद्विचारों से एवं भीतर-बाहर से विश्वस्त रहने वालों को ही प्राप्त होता है । महात्मा गाँधी से अंग्रेजी साम्राज्य थरथराता था, वह गाँधी व्यक्ति से नहीं डरता था वरन् उसके पीछे जो विशाल जन समूह की अटूट श्रद्धा थी, उससे घबराता था । यश सचमुच शक्ति है । उस शक्ति से सम्पन्न मनुष्य तुच्छ से महान् बन जाता है ।

(७) शौर्य–साहस बाजी मारता है । हिम्मत वालों की खुदा मदद करता है । आपत्ति में विचलित न होना, संकट के समय धैर्य रखना, विपत्ति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय विवेक को कायम रखना मनुष्य की बहुत बड़ी विशेषता है । बुराइयों के विरुद्ध लड़ना, संघर्ष करना और उन्हें परास्त करके दम लेना शौर्य है । शांति अच्छी है परन्तु अशांति का अन्त करने वाली अशांति भी शांति के समान ही अच्छी है । कायरता की जिन्दगी से मर्दानगी की मौत अच्छी । स्वाभिमान, धर्म और मर्यादा की रक्षा के लिए मनुष्य को बहादुर होना चाहिए ।

खतरे में पड़ने का चाव निर्भीकता, बहादुरी, जोश-यह सब आन्तरिक प्रेरक शक्ति के, गरम खून के चिह्न हैं । जो फूँक-फूँक कर पाँव धरते हैं, सोचते और मौका ढूँढ़ते रह जाते हैं पर साहसी पुरुष कूद पड़ते हैं और तैर कर पार हो जाते हैं । दब्बू, डरपोक, कायर, कमजोर, शंकाशील मनुष्य सोचते और डरते रहते हैं, उनसे कोई असाधारण काम नहीं हो पाता । यह पृथ्वी वीर भोग्या है । वीर पुरुष के गले में ही यह जयमाला पहनाई जाती है । उद्योगी सिंह पुरुष ही लक्ष्मी को प्राप्त करते हैं ।

मनुष्य को साहसी होना चाहिए । विपत्ति आने पर शोक, चिन्ता, भय, घबराहट को हटाकर विवेकपूर्वक उस संकट के समाधान के लिए ठीक-ठीक सोच सकने का साहस होना मनुष्यता का लक्षण है । आततायियों से मुठभेड़ करने की बहादुरी होनी चाहिए । आगे बढ़ने के मार्ग में जो खतरे हैं, उनसे उलझने में जिसे रस आता है, वह शूरवीर है । जो साहसी, पराक्रमी, कर्मठ और निर्भीक है वह शाक्तिवान् है क्योंकि साहस रूपी प्रचण्ड शक्ति उसके हृदय में विद्यमान हैं ।

(८) सत्यता-सत्यता में अकूल बल भरा हुआ है । साँच को कहीं आँच नहीं । सत्य इतना मजबूत है कि उसे किसी भी हथियार से नष्ट नहीं किया जा सकता । जिसके विचार और कार्य सच्चे हैं, वह इस संसार का सबसे बड़ा बलवान् है । उसे कोई नहीं हरा सकता सत्यतापूर्ण हर एक कार्य के पीछे दैवी शक्ति होती है । असत्य के पैर जरा सी बात में लड़खड़ा जाते हैं और उसका भेद खुल जाता है किन्तु सत्य अडिग चट्टान की तरह सुस्थिर खड़ा रहता है । उस पर चोट करने वालों को स्वयं ही परास्त होना पड़ता है ।

सदुद्देश्य, सद्भाव, सद्विचार, सत्कर्म, सत्संकल्प चाहे कितने ही छोटे रूप में सामने आवें यथार्थ में उनमें बड़ी भारी प्रभावशालिनी महानता छिपी होती है । हजार आडम्बरों से लिपटा हुआ असत्य जो कार्य नहीं करता वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कार्य सीधी और सरल सत्यता द्वारा पूरा हो जाता है । सत्यनिष्ठ पुरुष प्रभावशाली, तेजस्वी और शक्तिशाली होता है । जो सत्यनिष्ठ है, मन, कर्म और वचन से सत्य परायण रहते हैं, उनके बल की किसी भी भौतिक बल से तुलना नहीं की जा सकती ।

यह आठ बल भगवती दुर्गा की आठ भुजायें हैं । हमें उन आठों बलों को अधिकाधिक मात्रा में संचित करने के लिए प्रयत्नशील रहकर शक्ति पूजा करनी चाहिए । शक्ति की कृपा से लौकिक और पारलौकि सिद्धियाँ मिलती हैं स्वर्ग और मुक्ति भी शक्ति का ही प्रसाद है ।

पाठको ! शक्ति संचय के पथ पर अग्रसर होओ । मनचाही सुख समृद्धि प्राप्त करने के लिए आध्यात्मविज्ञान का अवलम्बन करो, अपने को अविनाशी आत्मा मानो, परिस्थितियों का निर्माता अपने आपको मानो और अष्टभुजी दुर्गा की उपासना करो । इस मार्ग पर चलने से तुम शक्तिवान् बनोगे । स्मरण रखो ! शक्तिवान् को ही सिद्धि प्राप्त होती है ।

शक्तियों का अपव्यय न करो

अमेरिका के सुप्रसिद्ध धन कुवेर जिनकी सम्पत्ति अरबो-खरबों रुपया है-हेनरी फोर्ड ने एक बार कहा था-"धन कुबेर होने पर भी मुझे जीवन में सुख नहीं है । जब मैं अपने लम्बे-चौड़े कारखाने में बेचारे गरीब मजदूरों को रूखा-सूखा और बिना स्वाद का भोजन बड़ी उत्सुकता और प्रसन्नता के साथ खाता हुआ देखाता हूँ तो उन पर मुझे ईर्ष्या होती है । तब मेरा जी चाहता है कि काश ! मैं धन कुबेर होने की अपेक्षा साधारण मजदूर होता ।

मौटे तौर से देखने पर यह बात अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतीत होती है कि एक असीम सम्पत्ति का स्वामी जिसके यहाँ सभी प्रकार के ऐशो-आराम के साधन प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं एक मजूर के भाग्य पर ईर्ष्या क्यों करता है ? क्या वह सचमुच मजूर की अपेक्षा अधिक अभावग्रस्त है ? इतना धन होते हुए भी कोई क्यों मजूर के भाग्य पर ईर्ष्या करते हैं ?

विवेकपूर्ण विचार करने से पता चलता है कि केवल मात्र धन ही ऐसी वस्तु नहीं है जिससे मनुष्य सुखी रह सके । बात यह है कि योग्य पदार्थ उसी को आनन्द दे सकते हैं जिसमें उपभोग की शक्ति हो । उपभोग की शक्ति क्षीण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

या विनष्ट हो जाने पर भोज्य सम्पदा कुछ भी सुख नहीं दे पाती । जिसकी पाचन शक्ति नष्ट हो गई है वह दाल-दलिये का पथ्य ही ले सकता है । छत्तीस प्रकार के व्यंजनों से सजा हुआ थाल उसके लिए विष के तुल्य है, उस थाल का आनन्द तो वही उठा सकता है जिसकी पाचन शक्ति तीव्र है । आँखों की ज्योति चले जाने पर अनेक प्रकार के सुरम्य दृश्य, चित्र, खेल-तमाशे आदि दर्शनीय पदार्थों का कोई मूल्य नहीं । नाक ठीक काम न करती हो तो बढ़िया इत्र और साधारण तेल एक समान है । काम सेवन की शक्ति नष्ट हो जाय, नपुंसकता आ घेरे तो रूप यौवन सम्पन्न रमणियाँ उस सुख का रसास्वादन नहीं करा सकतीं ।

उपभोग की सामर्थ्य न होने पर भोग्य सामग्री निरर्थक एवं निरुपयोगी हो जाती है । इतना ही नहीं उस सामग्री का होना उलटा खतरनाक बन जाता है । नपुंसक पति की नव यौवना पत्नी उसके लिए एक खतरा है । बीमार आदमी के समीप सुस्वाद भोजनों का जमाव उसके लिए कोई दुर्घटना उपस्थित कर सकता है । इस दृष्टि से हेनरी फोर्ड का कथन सत्य था । उन्होंने पैसा कमाने की धुन में अपने पेट को खराब कर लिया था । एकाध बिस्कुट, छटांक दो छटांक फलों का रस वे पचा पाते थे । फोर्ड महोदय जब अपनी फैक्टरी के मजूरों को मोटे-झोटे अनाज की रोटियाँ भर पेट खाते हुए देखते थे तो उन्हें उन मजूरों के भाग्य पर ईर्ष्या होती थी और कहते थे-'काश ! मैं धन कुबेर होने की अपेक्षा एक साधारण मजूर होता ।'

स्वस्थता कमाना और उसकी रक्षा करना, अन्य सभी सम्पत्तियों के उपार्जन और रक्षण से मूल्यवान् है । कई व्यक्ति विद्वान् बनते हैं पर उसे प्राप्त करने में इतनी जल्दबाजी करते हैं कि स्वास्थ्य चौपट हो जाता है । कई व्यक्ति धनी बनते हैं पर उस प्रयास में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि शक्तियों के अपव्यय के कारण तन्दुरुस्ती खराब हो जाती है । स्वास्थ्य नष्ट होने के उपरान्त वह विद्या और सम्पत्ति उन्हें कुछ भी सुख नहीं दे पाती, कमजोरी और बीमारी से वे आये दिन ग्रस्त रहते हैं । तब फोर्ड की भांति वे सोचते हैं कि योग्य सामग्रियों का संचय करने में हमने उपभोग शक्ति का बलिदान करके बड़ी भारी भूल की । इस भूल का पश्चात्ताप उन्हें शेष जीवन के दिन रो-रोकर बिताते हुए करना होता है ।

अनेक दृष्टियों से समृद्ध होना, भौतिक सम्पदाओं से सुसज्जित होना, हर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य को स्वभावतः प्रिय होता है और वह उचित तथा आवश्यक भी है । परन्तु इस उपार्जन की भी सीमा है । स्वास्थ्य की स्थिरता एवं सुरक्षा का ध्यान रखते हुए ही सब प्रकार की संपत्तियाँ उपार्जित करने का प्रयत्न करना चाहिए, जब कार्यक्रम इस मर्यादा का उल्लंघन कर रहा हो और स्वास्थ्य पर उस अति परिश्रम का बुरा असर हो रहा हो तो तुरन्त ही सावधान होने की आवश्यकता है । स्वस्थता में जो सुख है वह हैनरी फोर्ड जितनीसम्पत्ति के बदले में भी प्राप्त नहीं हो सकती ।

उपभोग सामग्री का संयमपूर्वक उपयोग करने से शक्तियाँ ठीक प्रकार काम करती हैं । अति रसास्वादन का असंयम उस उपभोग शक्ति को ही नष्ट कर देता है । अति काम सेवन से नपुंसकता, प्रमेह आदि रोग उत्पन्न होते हैं और अति के दण्ड स्वरूप उस शक्ति से सदा के लिए हाथ धोना पड़ता है । इसी प्रकार चटोरे व्यक्ति अपनी पाचन शक्ति को बिगाड़ लेते हैं और कड़ाके की भूख में भोजन करने के आनन्द से सदा के लिए वंचित हो जाते हैं । यही बात अन्य इन्द्रियों के बारे में भी है, इसीलिए शास्त्रकारों ने इन्द्रिय संयम पर विशेष जोर दिया है । इन्द्रिय संयम एक वैज्ञानिक विधान है जिसके द्वारा मनुष्य जीवन भर उपभोग शक्ति को कायम रख सकता है । ब्रह्मचर्य, व्रत, उपवास, मौन आदि आत्म-निग्रह के अनेक विधि-विधानों का उद्देश्य उन भोग शक्तियों को स्थिर रखना भी है जिनके द्वारा भोग्य पदार्थों के आनन्द का रसास्वादन किया जा सकता है ।

संसार में जिन्हें जीवन के अनेक आनन्दों का उपभोग करने की इच्छा है, उन्हें शक्तियों के अनुचित अपव्यय से बचने का प्रयत्न करना चाहिए । किसी प्रलोभन के आकर्षण में पड़कर जो लोग अपनी शारीरिक, मानसिक शक्तियों को अपव्यय करके गँवा देते हैं, वे अन्त में हेनरी फोर्ड की तरह पछताते हैं, तब सारी सम्पत्तियाँ मिलकर भी उन्हें वह आनन्द नहीं दे सकतीं जो स्वस्थता रहने पर अनायास ही मिल सकता था ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org